स्मारिका

2024 एवं 2025

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के कार्यक्रमों और कार्यकलापों पर सचित्र विस्तृत रिपोर्ट



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. राजेंद्र प्रसाद रोड, जी-विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001

https://www.csl.nic.in mailfromcsl@gmail.com

https://www.facebook.com/CSL.MOC; https://x.com/csl_moc?lang=en

स्मारिका 2024

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के कार्यक्रमों और कार्यकलापों पर सचित्र विस्तृत रिपोर्ट

संपादक



श्री मुनेश सेन

पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी (अतिरिक्त प्रभार)

सह संपादक



श्री राहुल दाबड़ा

सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

आवरण डिजाइन एवं सहयोग



श्री विनय प्रभाकर मिश्र

पुस्तकालय एवं सूचना सहायक



श्री विनीत कुमार

पुस्तकालय एवं सूचना सहायक

संयुक्त सचिव का संदेश



डॉ. अरविन्द कुमार
संयुक्त सचिव
संस्कृति मंत्रालय

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा वर्ष 2024 एवं 2025 के दौरान संपादित गतिविधियों एवं उपलब्धियों को समाहित करती यह स्मारिका अत्यंत प्रशंसनीय एवं उपयोगी प्रकाशन है। यह न केवल ग्रंथागार की गौरवशाली परंपरा और समृद्ध संसाधनों का सुसंगठित प्रस्तुतीकरण है, बल्कि ज्ञान के प्रसार, शोध को प्रोत्साहन तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति इसकी सतत प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण भी है।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय के अधीन देश के प्रमुख सरकारी पुस्तकालयों में से एक है, जिसने अपने विस्तृत एवं बहुआयामी संग्रह के माध्यम से विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों की सूचना संबंधी आवश्यकताओं की प्रभावी पूर्ति की है। इस ग्रंथागार का संग्रह, जिसमें भारतीय एवं विदेशी आधिकारिक दस्तावेज, दुर्लभ पुस्तकें तथा विविध विषयों की महत्वपूर्ण सामग्री शामिल है, ज्ञान के एक अमूल्य भंडार के रूप में स्थापित है।

वर्ष 2024 एवं 2025 के दौरान ग्रंथागार द्वारा आयोजित विविध कार्यक्रम—जैसे पुस्तक प्रदर्शनियाँ, व्याख्यानमालाएँ, साहित्यिक परिचर्चाएँ, स्वास्थ्य शिविर तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के अवसरों पर विशेष आयोजन—इस संस्था की सक्रियता और समाजोन्मुख दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। डॉ. भीमराव अंबेडकर, गुरु रवींद्रनाथ टैगोर, मुंशी प्रेमचंद, महात्मा गांधी तथा सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे महान व्यक्तित्वों की जयंती पर आयोजित कार्यक्रमों ने न केवल उनके विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया, बल्कि समाज में जागरूकता और प्रेरणा का भी संचार किया।

विशेष रूप से दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण, डिजिटलीकरण के प्रयासों तथा इंडियन कल्चर पोर्टल के माध्यम से ज्ञान की सुलभता बढ़ाने की पहल अत्यंत सराहनीय है। इसके अतिरिक्त, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करते हुए वियतनाम कॉर्नर के सुदृढ़ीकरण की दिशा में किए गए प्रयास, ग्रंथागार की वैश्विक दृष्टि और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

ग्रंथागार द्वारा युवा वर्ग एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए आयोजित मार्गदर्शन सत्र तथा पाठ्यपुस्तक शाखा के माध्यम से शैक्षणिक सहयोग, ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े अभियानों में सक्रिय भागीदारी, इस संस्था के समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार भविष्य में भी अपने नवाचारों, उत्कृष्ट सेवाओं एवं समर्पित प्रयासों के माध्यम से ज्ञान, संस्कृति और अनुसंधान के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करता रहेगा। यह संस्था न केवल सरकारी तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

मैं ग्रंथागार के निदेशक, अधिकारियों एवं समस्त कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य, समर्पण एवं उपलब्धियों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

निदेशक का संदेश



डॉ. अजीत कुमार
निदेशक
केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार

केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार का पुस्तकालय-परिदृश्य पर अपना एक अलग ही स्थान दर्ज है। यह कई विशेष पुस्तकालयों का समिश्रण है जो मुख्य रूप से भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसके अतिरिक्त, शोधकर्ता, छात्र और शिक्षाविद भी इससे लाभान्वित होते हैं। ग्रंथागार की पाठ्य पुस्तक शाखा आर. के. पुरम में है जबकि इसकी दूसरी शाखा का नाम तुलसी सदन पुस्तकालय है। ग्रंथागार में 8.48 लाख दस्तावेज़ों का संग्रह है जिसमें भारतीय सरकारी प्रकाशन, पुस्तकें, विदेशी संस्थाओं के प्रकाशन और अन्य सामग्री शामिल है। ग्रंथागार ने दुर्लभ पुस्तकों के लिए एक अलग अनुभाग स्थापित किया है जिसमें इस समय 5545 पुस्तकें शामिल है। इसकी आर. के. पुरम स्थित पाठ्य पुस्तक शाखा में 29000 पुस्तकों का संग्रह है जो RFID तकनीक से सुसज्जित है। तुलसी सदन पुस्तकालय शाखा में 2,21,751 पुस्तकों का महत्वपूर्ण संग्रह है। वर्ष 2025 में पुस्तकालय ने 279 नए सदस्यों को पंजीकृत किया। भारतीय आधिकारिक दस्तावेज़ अनुभाग में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में प्रकाशित 140 सरकारी प्रकाशन शामिल किए गए हैं।

16 अप्रैल, 2024 को भारत रत्न डॉ. भीम राव अंबेडकर की 133वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक पुस्तक प्रदर्शनी और 08 मई, 2024 को "लेखक से मुलाकात" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 21 जून, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग और 11 जुलाई, 2024 को विश्व जनसंख्या दिवस पर जनसंख्या विषय से संबंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई। अक्तूबर 2024 के दौरान ग्रंथागार को "Best Government Library Award 2024" से सम्मानित किया गया। 20 से 21 नवंबर, 2024 के दौरान "कला, संस्कृति वास्तुकला" विषय पर दुर्लभ पुस्तकों और 26 नवंबर, 2024 को संविधान दिवस के अवसर पर संविधान से संबंधित और 25 दिसंबर, 2024 को पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर उनसे संबंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी का संचालन किया गया। 10 जनवरी, 2025 को ग्रंथागार की आर. के. पुरम शाखा में सिविल सेवा परीक्षा के मनोवैज्ञानिक पक्ष और तनाव के बाबत दिए गए व्याख्यान का प्रतिभागियों पर गहरा असर पड़ा। विचाराधीन वर्ष के दौरान ग्रंथागार ने वैश्विक पुस्तकालय शिखर सम्मेलन 2025 में विशेष अतिथि की हैसियत से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

"प्रधानमंत्री द्वारा परीक्षा पर चर्चा – 2025" कार्यक्रम को उपयोगकर्ताओं ने अत्यंत सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण बताया। 13 और 14 फरवरी, 2025 के दौरान आयोजित कोहा साफ्टवेयर प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। 19 फरवरी, 2025 को छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 4 मार्च, 2025 को लेखन मिलन एवं पुस्तक परिचर्चा कार्यक्रम, 24 अप्रैल, 2025 को वियतनाम कार्नर में एक विशेष स्मारक पुस्तक भेंट समारोह, 12 अगस्त, 2025 को राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस का आयोजन हुआ।

14 नवंबर, 2025 को रूसी प्रतिनिधिमंडल के साथ द्विपक्षीय बैठक हुई। इस बैठक के माध्यम से भारत और रूस के बीच पुस्तकालय सहयोग को सुदृढ़ करने, ज्ञान एवं सूचना के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग बढ़ाने तथा भविष्य में संयुक्त पहलों की संभावनाओं पर सकारात्मक चर्चा हुई। 25 दिसंबर, 2025 को केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विचाराधीन वर्ष के दौरान आयोजित अन्य कार्यक्रमों ने स्मारिका, 2025 को एक अनुपम और अद्वितीय यादगार बनाकर उसे गौरव प्रदान किया। शुभेच्छाओं सहित।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय के अधीन देश के सबसे बड़े सरकारी पुस्तकालयों में से एक है। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के संसाधन स्वतंत्रता-पूर्व भारत के कई पुस्तकालयों और प्रतिष्ठित संस्थानों, जैसे इंपीरियल सचिवालय पुस्तकालय के संग्रह का संयोजन हैं। विशेष रूप से, भारतीय और विदेशी आधिकारिक दस्तावेज अनुभाग इसके मुख्य संग्रह का एक अमूल्य हिस्सा है। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार एक सचिवालय पुस्तकालय के रूप में कार्य करता है, जो आवश्यक सरकारी रिपोर्टों और राजपत्रों का संग्रहण करता है। यह मुख्य रूप से भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसके अलावा, गैर-आधिकारिक उपयोगकर्ता, जैसे शोधकर्ता, शिक्षाविद, छात्र और अन्य भी इस प्रतिष्ठित पुस्तकालय के सदस्य बन कर उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। पुस्तकालय में 8.48 लाख दस्तावेजों का संग्रह है, जिसमें पुस्तकें, भारतीय सरकारी प्रकाशन, विदेशी संस्थाओं के प्रकाशन और अन्य सामग्री शामिल हैं।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार का प्राथमिक उत्तरदायित्व केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों को जानकारी प्रदान करना है। पुस्तकालय का संग्रह मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञान, भारतीय इतिहास, क्षेत्रीय अध्ययन, महिला अध्ययन, प्रतिष्ठित व्यक्तियों की जीवनी, अध्यात्म, साहित्य और अन्य संबंधित क्षेत्रों पर केंद्रित है। इसमें योजना और विकास अध्ययन तथा सरकारी नीतियों पर भी जोर दिया गया है। इसके अलावा, 1984 से यह भारत सरकार के प्रकाशनों का संग्रह करने का कार्य भी करता है। साथ ही, विदेशी आधिकारिक दस्तावेज अनुभाग में संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और आई.एम.एफ. जैसे प्रतिष्ठित संगठनों के प्रकाशन का संग्रह भी शामिल हैं, जो इस पुस्तकालय के अनूठे संग्रह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

पुस्तकालय ने दुर्लभ पुस्तकों के लिए एक अलग अनुभाग स्थापित किया है, जिसमें वर्तमान में 5545 शीर्षकों का प्रभावशाली संग्रह है। इस संग्रह की सबसे पुरानी पुस्तक 1702 में प्रकाशित हुई थी और इसे पूर्व इम्पीरियल सचिवालय पुस्तकालय से प्राप्त किया गया है। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की दुर्लभ पुस्तकों को संस्कृति मंत्रालय के इंडियन कल्चर पोर्टल https://cslopac.nvli.in/ पर देखा एवं पढ़ा जा सकता है।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की शाखाएँ

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार 'जी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की दो अन्य शाखाएँ है:

1 पाठ्यपुस्तक शाखा (आर.के. पुरम)



यह पुस्तकालय आसपास के क्षेत्रों में काम करने और रहने वाले सरकारी अधिकारियों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तक पुस्तकालय के रूप में कार्य करता है, जो दिल्ली में स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम कर रहे हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। वर्तमान में, इस पुस्तकालय में लगभग 29,000 पुस्तकों का संग्रह है जो RFID तकनीक से सुसज्जित है। पुस्तकालय पूर्ण रूप से वातानुकूलित है तथा साथ में Wi-Fi की सुविधा भी उपलब्ध है।

2 तुलसी सदन पुस्तकालय
(हिंदी और क्षेत्रीय भाषा शाखा)



इस पुस्तकालय को वर्ष 1972 में गोस्वामी तुलसीदास जी की 400वीं जयंती के अवसर पर स्थापित किया गया था जिसमें 14 भारतीय भाषाओं में 2,21,751 पुस्तकों का प्रभावशाली संग्रह है, जिसमें साहित्य, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर जोर दिया गया है। तथापि, 2010 से यह पुस्तकालय दिल्ली मेट्रो के निर्माण के कारण निष्क्रिय था। वर्तमान में, असमिया और कन्नड़ अनुभाग को पाठ्यपुस्तक शाखा (आर.के. पुरम) में तथा हिन्दी अनुभाग को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, शास्त्री भवन में पुनः खोल दिया गया है।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की सदस्यता

दिल्ली/राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन.सी.आर.) में काम करने वाले सरकारी कर्मचारी पुस्तकालय की सदस्यता प्राप्त करने के पात्र हैं। आधिकारिक उपयोगकर्ताओं के अलावा, गैर-आधिकारिक उपयोगकर्ता भी सदस्यता शुल्क का भुगतान करके पुस्तकालय का उपयोग कर सकते हैं। केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए सदस्यता की अवधि पाँच वर्ष है। वर्ष 2024 में पुस्तकालय ने 371 नए सदस्यों को पंजीकृत किया, साथ ही, 102 विशेष सदस्यों और 1720 अस्थायी उपयोगकर्ताओं को भी पंजीकृत किया गया। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार का सदस्यता फॉर्म https://csl.nic.in से प्राप्त किया जा सकता है।

पुस्तकालय की समय-सूची

पुस्तकालय सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 9:00 बजे से शाम 6:30 बजे तक और शनिवार को सुबह 9:00 बजे से शाम 5:30 बजे तक खुला रहता है। रविवार एवं राजपत्रित अवकाश पर पुस्तकालय बंद रहता है।

संग्रह विकास

भारतीय आधिकारिक दस्तावेज अनुभाग में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों से प्रकाशित 184 सरकारी प्रकाशन शामिल किए गए हैं। विदेशी आधिकारिक दस्तावेज अनुभाग ने प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से 420 दस्तावेज प्राप्त किए हैं। पुस्तकालय में 20 नई पुस्तकें खरीदी गईं और 383 पुस्तकों को उपहार स्वरूप प्राप्त किया गया। इस प्रकार, पुस्तकालय में कुल 1007 नए शीर्षकों को अपने संग्रह में जोड़ा गया।

समाचार पत्र और पत्रिकाएँ

पुस्तकालय में वर्षभर में 38 पत्रिकाओं/मैगजीन और 19 भारतीय समाचार पत्रों को खरीदा गया। साथ ही, 46 पत्रिकाएं पुस्तकालय में उपहार स्वरूप प्राप्त हुईं।

माइक्रोफिल्म विभाग

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार भारतीय प्रकाशन परियोजना (एम.आई.पी.पी.) की मुख्य एजेंसी के रूप में कार्य करता है, जिसका उद्देश्य 20वीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्यिक कार्यों का संरक्षण करना है। इस पहल को अमेरिकी कांग्रेस पुस्तकालय की साझेदारी में पूरा किया गया। वर्तमान में, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में टाइम्स ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्स, न्यूयॉर्क टाइम्स, अब्राहम लिंकन पेपर्स और ब्रिटिश लाइब्रेरी इंडेक्स जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशनों की 736 माइक्रोफिल्म रोल्स हैं।

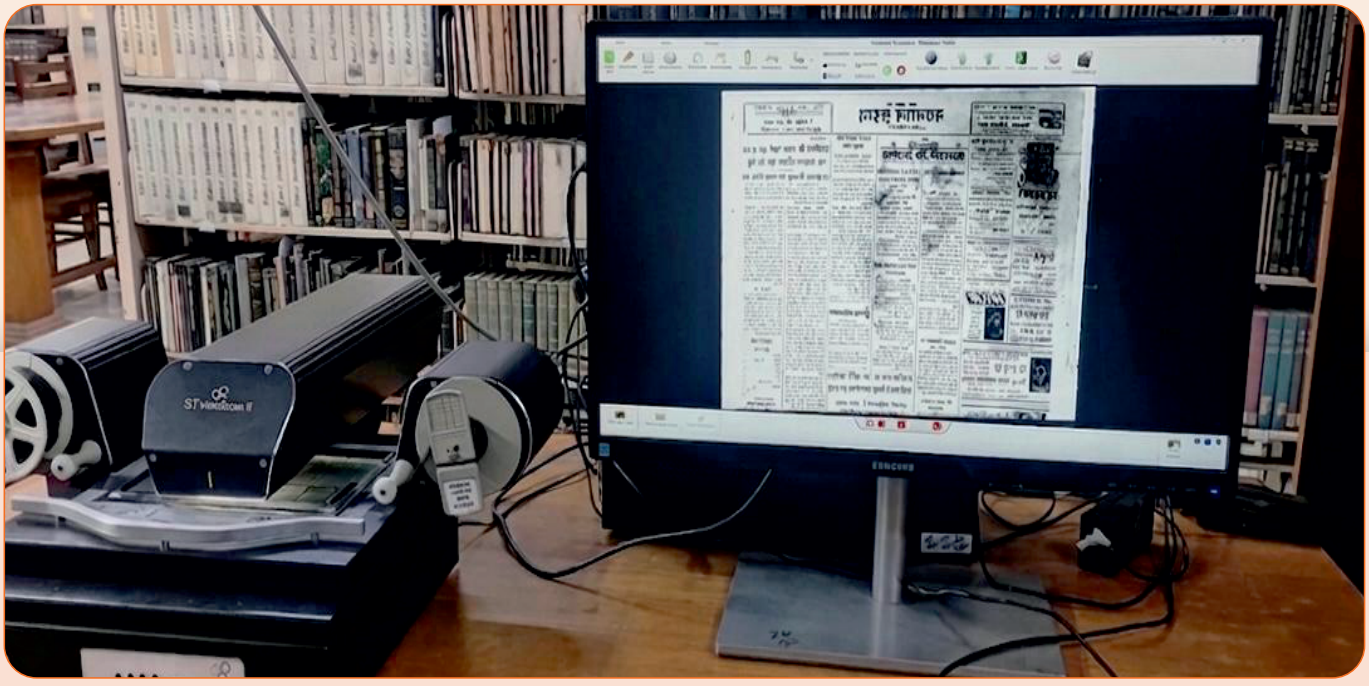

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा जनवरी से दिसम्बर 2024 तक आयोजित कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों की विस्तृत रिपोर्ट

केन्द्रीय सरकारी पुस्तकालय संघ (सीजीएलए) द्वारा डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार का सम्मान

दिनांक 14 मार्च, 2024 को केन्द्रीय सरकारी पुस्तकालय संघ (सीजीएलए), नई दिल्ली शाखा की कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण ने डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार को उनके केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक बनने पर शुभकामनाएं प्रदान की।





केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में निःशुल्क दंत एवं नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन

दिनांक 14 मार्च, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा निःशुल्क दंत एवं नेत्र जांच शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस शिविर में, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय और अन्य मंत्रालयों के कर्मचारियों के साथ ग्रंथागार के नियमित पाठकों ने भी सक्रिय भागीदारी की। शिविर का उदेश्य ग्रंथागार से जुड़े व्यक्तियों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और उन्हे स्वास्थ्य जांच की सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध कराना था।

शिविर में दंत चिकित्सा एवं नेत्र चिकित्सा के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम मौजूद थी, जिन्होंने अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग करते हुए प्रतिभागियों की जांच की। जांच के दौरान दांतों और मसूड़ों से संबंधित समस्याओं, आंखों के दृष्टि संबंधी विकारों और अन्य संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान की गई। इसके साथ ही, प्रत्येक प्रतिभागी को उनकी स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सलाह और उपचार के लिए सुझाव दिए गए। इस अवसर पर लोगों को दंत और नेत्र स्वास्थ्य के महत्व को समझाने के लिए एक जागरूकता सत्र भी आयोजित किया गया। इस सत्र में डॉक्टरों ने स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, नियमित स्वास्थ्य जांच कराने, संतुलित आहार लेने और व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने के तरीकों पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों को यह भी बताया गया कि समय पर बीमारी का पता लगाना और उसका उपचार करना किस प्रकार गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से बचा सकता है।

शिविर में भाग लेने वाले कर्मचारियों और पाठकों ने ग्रंथागार की इस पहल की सराहना की। उन्होंने इसे एक प्रेरणादायक कदम बताया जो कर्मचारियों और समाज के प्रति ग्रंथागार की जिम्मेदारी को दर्शाता है। इस प्रकार के आयोजन से न केवल स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ती है, बल्कि संस्थानों और उनके कर्मचारियों के बीच एक मजबूत संबंध भी स्थापित होता है। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने इस आयोजन के माध्यम से एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश भी दिया है कि स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान देना कार्यक्षमता और समग्र जीवन गुणवत्ता को बेहतर बनाने का एक अभिन्न हिस्सा है।





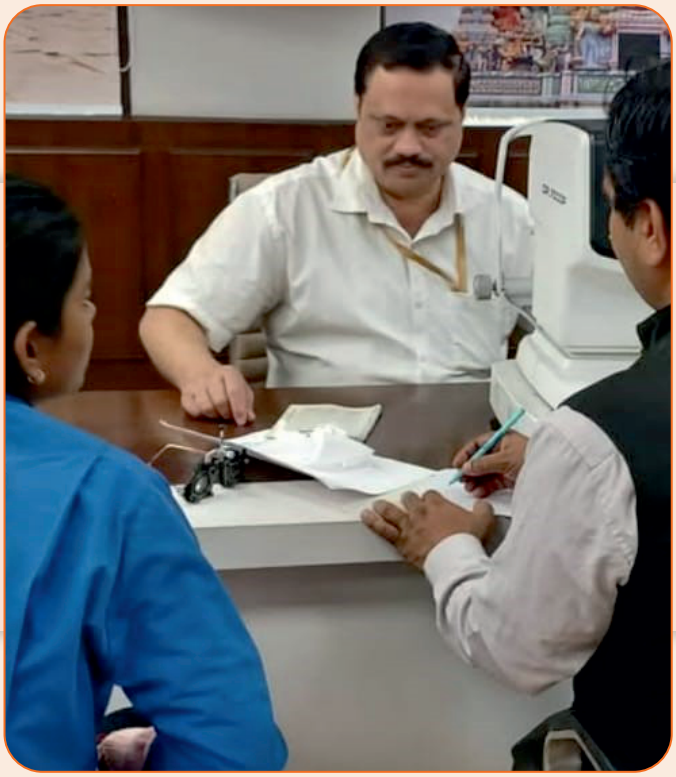

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 133वीं जयंती का आयोजन

दिनांक 16 अप्रैल, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 133वीं जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ. अंबेडकर के जीवन, विचारधारा और योगदान को समर्पित एक पुस्तक प्रदर्शनी और व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में उनके जीवन से संबंधित पुस्तकों, दस्तावेजों और ऐतिहासिक सामग्रियों को प्रस्तुत किया गया जिससे उपस्थित आगंतुकों को डॉ. अंबेडकर के बहुआयामी व्यक्तित्व और उनके समाज सुधार प्रयासों को गहराई से समझने का अवसर मिला।

इस आयोजन की अध्यक्षता केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार ने की। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बाबा साहब के संघर्षमय जीवन, उनकी अद्वितीय शैक्षणिक उपलब्धियों और भारत के संविधान निर्माण में उनके योगदान का विशेष रूप से उल्लेख किया। डॉ. अजीत कुमार ने यह भी रेखांकित किया कि डॉ. अंबेडकर का जीवन समाज में समानता, न्याय और समरसता की स्थापना के लिए प्रेरणा स्रोत है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित प्रसिद्ध शिक्षाविद और दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के प्रोफेसर (डॉ.) के. पी. सिंह ने अपने ओजस्वी भाषण में बाबा साहब के जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहन परिचय कराया। उन्होंने बाबा साहब के संघर्षों, उनके द्वारा स्थापित मूल्यों, और उनकी दूरदर्शिता को रेखांकित किया, जिसने भारत को एक आधुनिक, लोकतांत्रिक और समावेशी राष्ट्र के रूप में आकार दिया। प्रोफेसर सिंह का व्याख्यान न केवल ज्ञानवर्धक था, बल्कि उपस्थित श्रोताओं को गहराई से प्रेरित करने वाला भी था।

कार्यक्रम का संचालन श्री विनय प्रभाकर मिश्र ने किया, जिन्होंने अपनी स्पष्ट और आकर्षक शैली में पूरे आयोजन को सुव्यवस्थित और प्रभावशाली बनाया। उन्होंने श्रोताओं को डॉ. अंबेडकर के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और उनके विचारों से परिचित कराते हुए आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंत में, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव ने सभी उपस्थित अतिथियों, श्रोताओं और आयोजन में सहयोग करने वाले कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने विशेष रूप से डॉ. अजीत कुमार और प्रोफेसर (डॉ.) के. पी. सिंह का धन्यवाद किया जिन्होंने अपने विचारों और अनुभवों से कार्यक्रम को सार्थक और प्रेरणादायक बनाया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी, ग्रंथागार के पाठकगण, और शिक्षाविदों की उपस्थिति रही। यह आयोजन न केवल डॉ. अंबेडकर की जयंती को विशेष बनाने में सफल रहा, बल्कि उनके विचारों और सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम भी बना। कार्यक्रम ने सभी को बाबा साहब के जीवन और उनके द्वारा स्थापित मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी।









केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में नोबेल पुरस्कार विजेता गुरु रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती का आयोजन

दिनांक 08 मई, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा भारत के महान कवि, साहित्यकार, और नोबेल पुरस्कार विजेता गुरु रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के उपलक्ष्य में एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम गुरु रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन, उनके बहुमुखी योगदान और उनकी सांस्कृतिक विरासत को सम्मानित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक, डॉ. अजीत कुमार ने की। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन और उनकी साहित्यिक व सांस्कृतिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने टैगोर की कविताओं, गीतों, नाटकों और चित्रकला के माध्यम से समाज को दिए गए उनके अमूल्य योगदान की सराहना की। डॉ. अजीत कुमार ने इस बात पर जोर दिया कि टैगोर की रचनाएँ न केवल भारतीय समाज को बल्कि पूरे विश्व को शांति, मानवता और समरसता का संदेश देती हैं।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) के कला और सौंदर्य शास्त्र विभाग की प्राध्यापक और डीन, प्रोफेसर (डॉ.) उर्मिमाला सरकार मुंसी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने व्याख्यान में टैगोर के जीवनवृत्त के साथ-साथ कला और नृत्य के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदानों पर विस्तार से चर्चा की। प्रोफेसर मुंसी ने बताया कि टैगोर ने किस प्रकार भारतीय कला और नृत्य को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया और उसे एक नई पहचान दिलाई। उन्होंने टैगोर के नृत्य-नाटक शैली और शांतिनिकेतन में कला के प्रति उनके समर्पण पर विशेष जोर दिया। प्रोफेसर मुंसी ने यह भी बताया कि टैगोर की रचनाओं में प्रकृति और मानवता के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से झलकती है।

कार्यक्रम में संस्कृति मंत्रालय के निदेशक, श्री अनीश पी. राजन ने भी अपना उदबोधन दिया। उन्होंने टैगोर की विचारधारा और उनके कार्यों को समकालीन समय में प्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि टैगोर ने शिक्षा, साहित्य और कला को न केवल सृजनात्मकता का माध्यम बनाया, बल्कि समाज सुधार और मानवता के उत्थान के लिए भी इनका उपयोग किया। राजन ने इस बात पर जोर दिया कि टैगोर के विचार और रचनाएँ आज भी हमें प्रेरित करती हैं और हमें उनके सिद्धांतों से सीखने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी, ग्रंथागार के पाठकगण और शिक्षाविदों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। यह आयोजन गुरु रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती को विशेष बनाने में सफल रहा और उनके जीवन एवं कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने का एक प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हुआ।

अंत में, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव, ने सभी उपस्थित अतिथियों, श्रोताओं और आयोजन में सहयोग करने वाले कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने विशेष रूप से डॉ. अजीत कुमार और प्रोफेसर (डॉ.) उर्मिमाला सरकार मुंसी का धन्यवाद किया जिन्होंने अपने विचारों और अनुभवों से कार्यक्रम को सार्थक और प्रेरणादायक बनाया।


आज़ादी का
अमृत महोत्सव
CSL
द्वारा



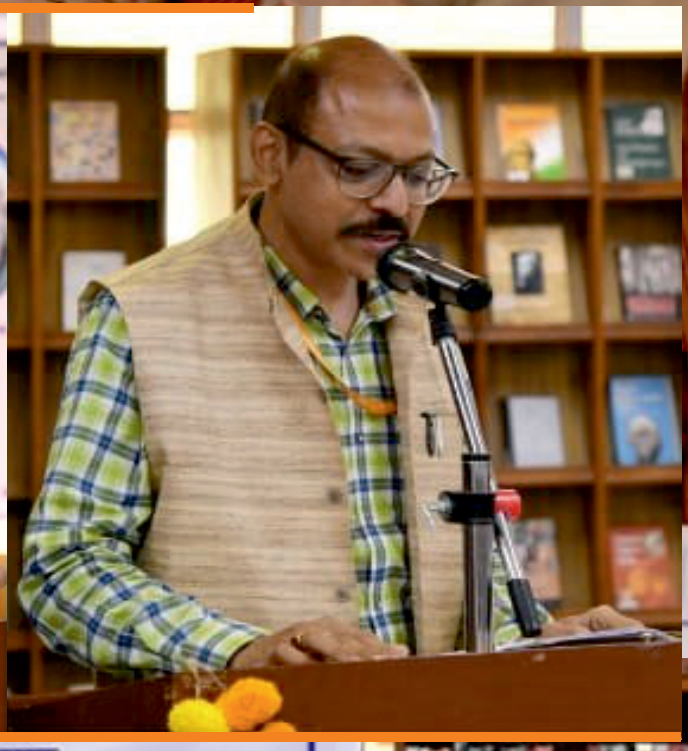


केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार
द्वारा
गुरू रविन्द्रनाथ टैगोर
की जयंती के उपलक्ष में
"पुस्तक प्रदर्शनी एवं व्याख्यान"
डॉ. उर्मिमाला सरकार मुंसी
(वक्ता)
मुग्धा सिन्हा
(मुख्य अतिथि)

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में “लेखक से मुलाक़ात” कार्यक्रम का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा दिनांक 05 जून, 2024 को "लेखक से मुलाक़ात" कार्यक्रम के तहत एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता सुश्री निवेदिता बांदिल जी थी एवं उनके द्वारा रचित काव्य पुस्तक का विषय *"अंतर्द्वंद"* था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर (डॉ.) मंगल मूर्ति जी उपस्थित थे। प्रोफेसर (डॉ.) मंगल मूर्ति जी प्रख्यात साहित्यकार स्वर्गीय शिवपूजन सहाय जी के कनिष्ठ पुत्र एवं वर्तमान में शिवपूजन सहाय स्मारक न्यास पटना के संस्थापक व सचिव भी हैं। प्रोफेसर (डॉ.). मंगल मूर्ति एक प्रख्यात लेखक, कवि, स्तंभकार और समालोचक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने कई संस्मरण, कविताओं और पुस्तकों का अनुवाद किया है। उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें बिहार राष्ट्रभाषा सहित कई अन्य सम्मान प्राप्त हुए हैं।

कार्यक्रम की विश्लेषक सुश्री दीपा जी थी। सुश्री दीपा जी दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत महर्षि अरविंद महाविद्यालय में हिंदी विषय की सहायक प्राध्यापिका हैं। कार्यक्रम के समन्वयक, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार जी थे। यह कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया था जिसमें लगभग 120 साहित्य प्रेमियों और विद्वानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार जी के स्वागत संबोधन के साथ हुआ। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य साझा करते हुए, कवयित्री सुश्री निवेदिता बांदिल जी और उनकी साहित्यिक कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया। डॉ. अजीत कुमार जी ने *"अंतर्द्वंद"* काव्य पुस्तक से *"अभिलाषा"* और *"मैं बन जाऊं"* नामक दो कविताओं का भी पाठ किया। इन कविताओं के माध्यम से उन्होंने कवयित्री की रचनात्मक शैली और भावनाओं की गहराई को उजागर किया। पहली कविता *"अभिलाषा"* में कवयित्री ने प्रकृति और समाज के महत्वपूर्ण सामाजिक हिस्सेदारी को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस कविता में कवयित्री ने कैसे अपनी अभिलाषाओं को व्यक्त किया है जो समाज में एक सक्रिय और संवेदनशील भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती है।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता सुश्री निवेदिता बांदिल ने अपनी काव्य पुस्तक *“अंतर्द्वंद”* पर चर्चा के दौरान अपने जीवन के अनुभवों और भावनाओं का प्रतिबिंब बताया। उन्होंने कविताओं का पाठ करते हुए उनकी प्रेरणा और संदेश को साझा किया। विशेष रूप से, *"एक नन्ही सी बिल्ली"* कविता के माध्यम से उन्होंने पशु प्रेम और समाज में प्रचलित धारणाओं पर प्रकाश डाला। डॉ. दीपा ने *"मैं तुमसे मिलने आया था"* कविता का पाठ और विश्लेषण किया जिसमें समय के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है।

चर्चा के दौरान प्रोफेसर (डॉ.) मंगल मूर्ति ने साहित्य के महत्व पर जोर देते हुए बताया कि यह हमारे विचारों को गहराई देता है, समाज की समस्याओं को समझने में मदद करता है और सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है। यह कार्यक्रम साहित्य और मानवीय संवेदनाओं के महत्व को रेखांकित करता है।

प्रोफेसर मंगल मूर्ति जी ने इस बात पर जोर दिया कि साहित्य हमें न केवल व्यक्तिगत रूप से, बल्कि सामूहिक रूप से भी समृद्ध करता है। यह हमें विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और जीवन दृष्टिकोण को समझने का

अवसर प्रदान करता है। उन्होंने साहित्य को एक ऐसा माध्यम बताया जो हमें मानवता के मूल्यों को समझने और उन्हें अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि साहित्यिक कार्यकलाप हमारे समाज में नैतिकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देते हैं। कार्यक्रम के अंत में, डॉ. मूर्ति जी ने कवयित्री के उज्जवल भविष्य की कामना की और उनके आगामी साहित्यिक कार्यों के लिए भी शुभकामनाएं दीं।

यह कार्यक्रम *"अंतर्द्वंद"* काव्य पुस्तक और साहित्य के प्रति रुचि रखने वालों के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम था। इसने साहित्यिक चर्चा और विचार-विमर्श का एक मंच प्रदान किया और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए साहित्य की शक्ति को रेखांकित किया।

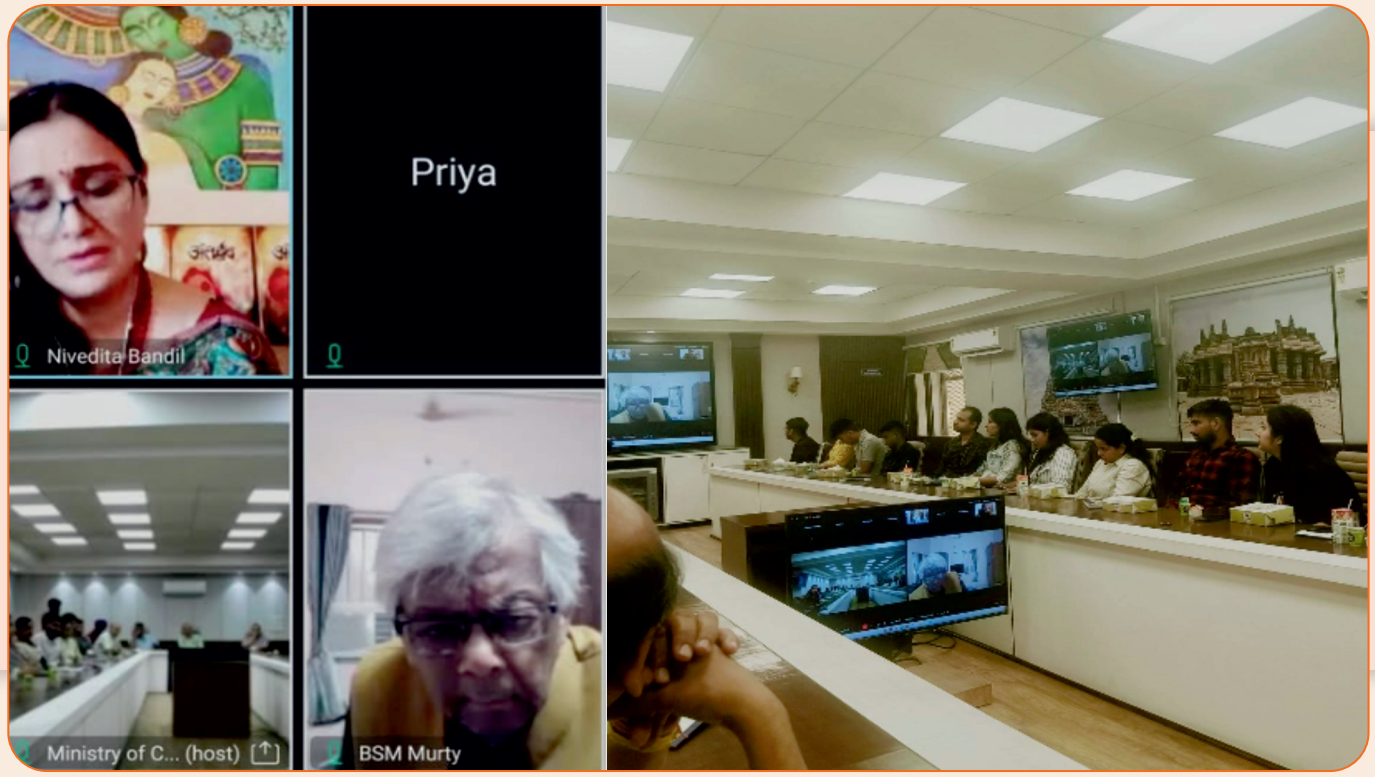

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार का वियतनामी समाजवादी गणराज्य के दूतावास की सांस्कृतिक अटैची सुश्री लिन टोन और राजनीतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक अनुभाग की प्रमुख एवं काउंसलर (राजनीतिक) सुश्री त्रान थान हुओंग से मुलाक़ात

दिनांक 13 जून, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार तथा पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव. ने भारत में वियतनाम समाजवादी गणराज्य के दूतावास की सांस्कृतिक अटैची सुश्री लिन टोन और राजनीतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक अनुभाग की प्रमुख एवं काउंसलर (राजनीतिक) सुश्री त्रान थान हुओंग से मुलाकात की। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में स्थापित वियतनाम कॉर्नर को अधिक उपयोगी बनाने पर विचार-विमर्श करना था।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में स्थापित वियतनाम कॉर्नर भारत और वियतनाम के बीच सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम है। यह कॉर्नर वियतनाम के इतिहास, संस्कृति, साहित्य, और समकालीन उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है। इसमें वियतनामी भाषा में पुस्तकों, अंग्रेजी में अनूदित साहित्य, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ ग्रंथों और अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्री का संग्रह उपलब्ध है, जो वियतनाम के समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं को समझने में सहायक है।

यह कॉर्नर न केवल शोधकर्ताओं और पाठकों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, बल्कि यह भारत और वियतनाम के बीच सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने का भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। यह दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक मित्रता, सहयोग और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने का प्रतीक है।

डॉ. अजीत कुमार एवं डॉ. वाई. अवनिंद्रनाथ राव ने दूतावास के अधिकारियों के साथ इस कॉर्नर के उपयोग को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न सुझावों पर चर्चा की। उन्होंने इसे वियतनाम की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, कला प्रदर्शनियों और विचार गोष्ठियों के माध्यम से एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव दिया। इसके अतिरिक्त, वियतनाम की साहित्य, कला और समकालीन उपलब्धियों को भारतीय पाठकों और शोधकर्ताओं तक पहुंचाने के लिए अनुवाद परियोजनाओं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों पर भी विचार किया गया।

सुश्री त्रान थान हुओंग और सुश्री लिन टोन ने इन प्रयासों की सराहना की और वियतनाम कॉर्नर को एक प्रभावशाली सांस्कृतिक मंच बनाने के लिए दूतावास के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने इस पहल को दोनों देशों के बीच पारस्परिक समझ और मित्रता को और गहराई देने का एक महत्वपूर्ण कदम बताया। यह बैठक भारत और वियतनाम के बीच लंबे समय से चले आ रहे सांस्कृतिक और कूटनीतिक संबंधों को और सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी।







केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2024 के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी और योग पर प्रकाशित ग्रंथ सूची का विमोचन

दिनांक 21 जून, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2024 के अवसर पर केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें योग पर चयनित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई और योग से संबंधित एक ग्रंथ सूची का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार और संस्कृति मंत्रालय के निदेशक श्री यशवीर सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने योग पर आधारित पुस्तकों का विशेष संग्रह प्रदर्शित किया जिसमें योग की विविध विधाओं, उनके लाभ, प्राचीन और आधुनिक दृष्टिकोण, योग के मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर आधारित साहित्यिक कार्य शामिल थे। यह प्रदर्शनी योग के महत्व को समझने और इसके अभ्यास को बढ़ावा देने के लिए एक सशक्त कदम था। साथ ही, इस कार्यक्रम के दौरान एक विशेष ग्रंथ सूची का विमोचन भी किया गया। प्रदर्शनी में योग से संबंधित प्रमुख पुस्तकें रखी गई थी जो योग के सिद्धांतों, अभ्यास विधियों और जीवन में योग के लाभों को उजागर करती हैं। इस कार्यक्रम ने न केवल योग के लाभों को प्रदर्शित किया, बल्कि यह समाज में योग के महत्व को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार अधिकारियों का वियतनाम दूतावास का दौरा – वियतनाम कॉर्नर के पुनरुद्धार के लिए बैठक

दिनांक 25 जून, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के अधिकारी वियतनाम कॉर्नर के पुनरुद्धार के लिए वियतनाम दूतावास पहुंचे। इस महत्वपूर्ण बैठक में केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार और पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव ने भाग लिया। यह बैठक सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी श्री हर्ष जीवन भास्कर के सहयोग से हुई। बैठक का मुख्य उद्देश्य वियतनाम कॉर्नर को और अधिक प्रभावी बनाने और उसे भारतीय पाठकों के लिए एक उपयोगी संसाधन के रूप में विकसित करने पर चर्चा करना था। इस बैठक में वियतनाम दूतावास की काउंसलर (राजनीतिक) सुश्री त्रान थान हुओंग और सांस्कृतिक अटैची सुश्री लिन टोन ने भी भाग लिया।

वियतनाम कॉर्नर में वियतनाम की संस्कृति, इतिहास, साहित्य और कला को प्रदर्शित किया जाता है और इसे भारत और वियतनाम के बीच सांस्कृतिक संबंधों को सशक्त बनाने का एक महत्वपूर्ण मंच माना जाता है। बैठक में वियतनाम दूतावास के अधिकारियों ने वियतनाम कॉर्नर के पुनरुद्धार के लिए सहयोग और समर्थन की पेशकश की। इस बैठक ने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समृद्धि की दिशा में एक नई पहल की शुरुआत की।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के आर. के. पुरम शाखा पुस्तकालय में “विचार एवं कार्यनीति: सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी" विषयक परिचर्चा का आयोजन

दिनांक 28 जून, 2024 को आर.के. पुरम शाखा पुस्तकालय में "विचार एवं कार्यनीति: सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी" विषय पर एक ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में 2022 बैच के आई.ए.एस. अधिकारी श्री शुभम शुक्ल और श्री चिरंजीव आनंद जी को आमंत्रित किया गया। उन्होने सिविल सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी कार्यनीतियां और अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार जी के स्वागत संबोधन के साथ हुआ। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य साझा करते हुए, सिविल सेवा परीक्षा में सफलता के लिए सही रणनीति, समय प्रबंधन और निरंतर परिश्रम आवश्यक हैं। हमारे वक्ताओं द्वारा साझा किए गए अनुभव और सुझाव निश्चित रूप से आप सभी को मार्गदर्शन देंगे।

इस कार्यक्रम में श्री शुभम शुक्ल और श्री चिरंजीव आनंद ने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी से संबंधित महत्वपूर्ण कार्यनीतियों और सुझावों को साझा किया। उन्होंने परीक्षा के विभिन्न चरणों की तैयारी, समय प्रबंधन, और सही संसाधनों के चयन के बारे में बात की। साथ ही, उन्होंने अभ्यर्थियों को परीक्षा में मानसिक रूप से मजबूत रहने और आत्मविश्वास बनाए रखने की सलाह दी।

कार्यक्रम के दौरान, एक प्रश्नोत्तरी सत्र आयोजित किया गया जिसमें उपस्थित पाठकों और अभ्यर्थियों ने सीधे अधिकारियों से अपने सवाल पूछे। इन प्रश्नों में मुख्य रूप से परीक्षा की तैयारी के सुझाव, पुस्तकों का चयन, और समय प्रबंधन-कार्यनीतियाँ शामिल थीं। श्री शुक्ल और श्री आनंद ने सभी सवालों का विस्तार से उत्तर दिया जिससे अभ्यर्थियों को उनके संदर्भ में सही दिशा मिली।

इस सत्र ने अभ्यर्थियों को न केवल सिविल सेवा की तैयारी में कार्यनीति तैयार करने में मदद की, बल्कि उनकी शंकाओं का समाधान भी किया जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा। कार्यक्रम में दिए गए व्यावहारिक सुझाव और कार्यनीतियाँ सिविल सेवा की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी रहीं। इस सत्र ने छात्रों के बीच सहयोग और ज्ञान साझा करने की भावना को भी बढ़ावा दिया।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में विश्व जनसंख्या दिवस पर ग्रंथ सूची का विमोचन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में 11 जुलाई 2024 को विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर एक विशेष आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से किया गया। इस अवसर पर पुस्तकालय में जनसंख्या और उससे संबंधित विभिन्न विषयों पर उपलब्ध पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई।

कार्यक्रम में डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, श्री एस.सी. बर्मा, सलाहकार (पूर्व संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय), श्री यशवीर सिंह, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय, श्री एन.पी. शुक्ला, उप सचिव एवं अन्य अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं पर आधारित पुस्तकों की एक विशेष ग्रंथ सूची भी जारी की गई। इस आयोजन में न केवल विश्व जनसंख्या दिवस के महत्व को महसूस किया गया, बल्कि जनसंख्या नियंत्रण और इसके प्रभावों पर चर्चा को भी प्रोत्साहित किया गया।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी और व्याख्यान का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में 26 जुलाई, 2024 को कारगिल विजय दिवस के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी और व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की शुरूआत, जिसे मुख्य अतिथि, मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह यादव वीएसएम (सेवानिवृत्त), निदेशक, सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज एंड सिमुलेशन (सीएस3), निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार, एवं अन्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया।

यह व्याख्यान हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत में निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार ने स्वागत भाषण दिया और कारगिल युद्ध के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। उनके भाषण के दौरान, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का भाषण भी श्रोताओं के साथ साझा किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह यादव वीएसएम (सेवानिवृत्त) ने कारगिल युद्ध के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने 02 जुलाई 1972 को हुए शिमला समझौते से शुरूआत करते हुए कारगिल संघर्ष के दौरान परवेज मुशर्रफ के राजनीतिक और सैन्य उद्देश्यों की भी बात की। उन्होंने इस दौरान कारगिल युद्ध के विभिन्न चित्र भी साझा किए। उन्होंने कैप्टन विक्रम बत्रा द्वारा टाइगर हिल पर कब्जा और पॉइंट 5140 पर उनकी सेवा की यादें साझा की, जहाँ वह युद्ध के दौरान शहीद हो गए थे। उन्होंने बताया कि कारगिल युद्ध में 527 सैनिक शहीद हुए, 1363 घायल हुए और सैनिकों के अदम्य साहस के लिए 300 वीरता पुरस्कार प्रदान किए गए। उन्होंने यह भी बताया कि सैनिक और सामान्य लोगों में क्या अंतर होता है। अंत में उन्होंने कैप्टन विक्रम बत्रा के प्रसिद्ध कथन 'ये दिल मांगे मोर' वाक्य से अपने संबोधन का समापन किया।

पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन दिया। उन्होंने सभी अतिथियों, वक्ताओं और उपस्थित सभी प्रतिभागियों का कार्यक्रम की सफलता में उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। श्री राव ने विशेष रूप से मुख्य अतिथि, मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह यादव वीएसएम (सेवानिवृत्त), निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार का धन्यवाद किया, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।





केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा मुंशी प्रेमचंद जी की 144वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय में दिनांक 31 जुलाई, 2024 को हिंदी साहित्य के अग्रणी और यशस्वी लेखक, अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को सिंचित कर विशाल वृक्ष बनाने वाले रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान और गबन उपन्यास का सृजन करने वाले मुंशी प्रेमचंद जी की 144वीं जयंती के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ. मिथिलेश मिश्रा, वरिष्ठ व्याख्याता इलेनॉइस विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा मुख्य वक्ता, प्रोफेसर (डॉ.) बंदना झा, भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली थे। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि मुग्धा सिन्हा, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय थीं।

कार्यक्रम का आरंभ केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में मुंशी प्रेमचंद जी की जयंती के अवसर पर दीप प्रज्वलन और उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण के साथ प्रारम्भ किया गया, तत्पश्चात ग्रंथागार के प्रथम तल पर सभागार में निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, डॉ. अजीत कुमार द्वारा मुख्य अतिथि डॉ. मिथिलेश मिश्रा तथा वक्ता प्रोफेसर (डॉ.) बंदना झा, का पौधे और शॉल से स्वागत किया गया। इसी क्रम में डॉ. अजीत कुमार जी का भी पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, श्री मुनेश सेन जी के द्वारा पौधे और शाल से सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम का मंच संचालन श्रीमती पूजा शर्मा, सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी ने किया। उद्घोषिका, पूजा शर्मा ने सभागार में उपस्थित तथा हाइब्रिड माध्यम से जुड़े सभी श्रोताओं को मुख्य अतिथि व वक्ता का संक्षिप्त परिचय दिया तथा शैक्षणिक क्षेत्र में किये जा रहे उनके कार्यों से श्रोताओं को अवगत कराया। निदेशक महोदय ने प्रेमचंद जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए स्वागत उदबोधन में संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, मुग्धा सिन्हा जी का आभार प्रकट किया। उन्होंने प्रेमचंद जी के प्रारंभिक जीवन, अपनी दादी से लगाव और उनकी कहानियों के लेखन पर पड़े प्रभाव का उल्लेख किया। उन्होंने प्रेमचंद जी के व्यक्तिगत जीवन, विपन्नता, पुनर्विवाह और उनकी लेखनी में ग्रामीण भारत की छाप को रेखांकित किया। गोदान,

गबन, रंगभूमि जैसे उपन्यासों और कर्बला, संग्राम जैसे नाटकों का उल्लेख करते हुए उन्होंने श्रोताओं से ग्रंथागार में उपलब्ध उनकी पुस्तकों को पढ़ने का आग्रह किया।

डॉ. बंदना झा ने ग्रंथागार के आमंत्रण पर आभार व्यक्त करते हुए अपने व्याख्यान की शुरूआत अकबर की पंक्तियों से की। उन्होंने बनारस की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गरिमा का उल्लेख करते हुए प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, कबीर और रामचंद्र शुक्ल के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से प्रेमचंद की लेखनी की सरलता और उनकी रचनाओं में किसानों, स्त्रियों, साहूकारों और पशुओं तक की भावनाओं को उकेरने की अद्वितीय क्षमता की सराहना की।

उन्होंने प्रेमचंद की कहानियों को कालजयी बताते हुए गांधीजी के आह्वान पर उनके नौकरी छोड़ने और *"मुंशी"* नाम से जुड़े किस्से का उल्लेख किया। प्रेमचंद को धर्मनिरपेक्ष और निष्पक्ष लेखक बताते हुए उनकी साहित्यिक विविधता को रेखांकित किया। व्याख्यान के अंत में, उन्होंने श्रोताओं को प्रेमचंद की रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित किया और पुनः आभार व्यक्त किया।

मुख्य अतिथि डॉ. मिथिलेश मिश्रा ने अपने व्याख्यान की शुरूआत निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार को धन्यवाद देते हुए की और इसे हरि की कृपा बताया। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन पर पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद के गहरे प्रभाव को स्वीकार किया। डॉ. मिश्रा ने प्रेमचंद के साहित्यिक योगदान पर विस्तार से चर्चा करते हुए उनकी विपन्नता और संघर्षमय जीवन को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि प्रेमचंद ने मात्र 18 वर्षों में 300 कहानियां और 15 उपन्यास लिखे, जिनकी कालजयिता उनके यथार्थवादी और आदर्शवादी दृष्टिकोण में निहित है। प्रेमचंद ने सामान्य जनजीवन की व्यथाओं को समझकर उन्हें अपनी रचनाओं में उतारा, जिसमें भारतीय समाज की जड़ परंपराओं का निष्पक्ष और गहन विश्लेषण मिलता है। डॉ. मिश्रा ने प्रेमचंद की लेखनी में समाज और मानव मन की गहराइयों को व्यक्त करने की क्षमता को सराहा और बताया कि टिमटिमाती ढिबरी की रोशनी में उनकी कालजयी रचनाओं का सृजन हुआ। उन्होंने श्रोताओं से यह आग्रह किया कि आधुनिक इंटरनेट युग में विचारशीलता और रचनात्मक मौलिकता को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने यथार्थ और आदर्शवाद के साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में समन्वय और संतुलन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। प्रेमचंद के लेखन में मानवीय संवेदनाओं की गहराई और तत्कालीन समाज की समस्याओं को बिना कटुता के प्रस्तुत करने की उनकी अद्भुत क्षमता की प्रशंसा करते हुए डॉ. मिश्रा ने अपने व्याख्यान का समापन किया और श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम के अंत में पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, डॉ. वाई. ए. राव के द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मिथिलेश मिश्रा एवं वक्ता डॉ. बंदना झा को कार्यक्रम में प्रेमचंद जी के विषय में विचार साझा करने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया गया। साथ ही, उन्होंने विशिष्ट अतिथि मुग्धा सिन्हा, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय एवं निदेशक, श्री अजीत कुमार जी को पाठकों के हित में निरंतर आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों के लिए भी साधुवाद दिया।


डॉ. मिथिलेश मिश्रा



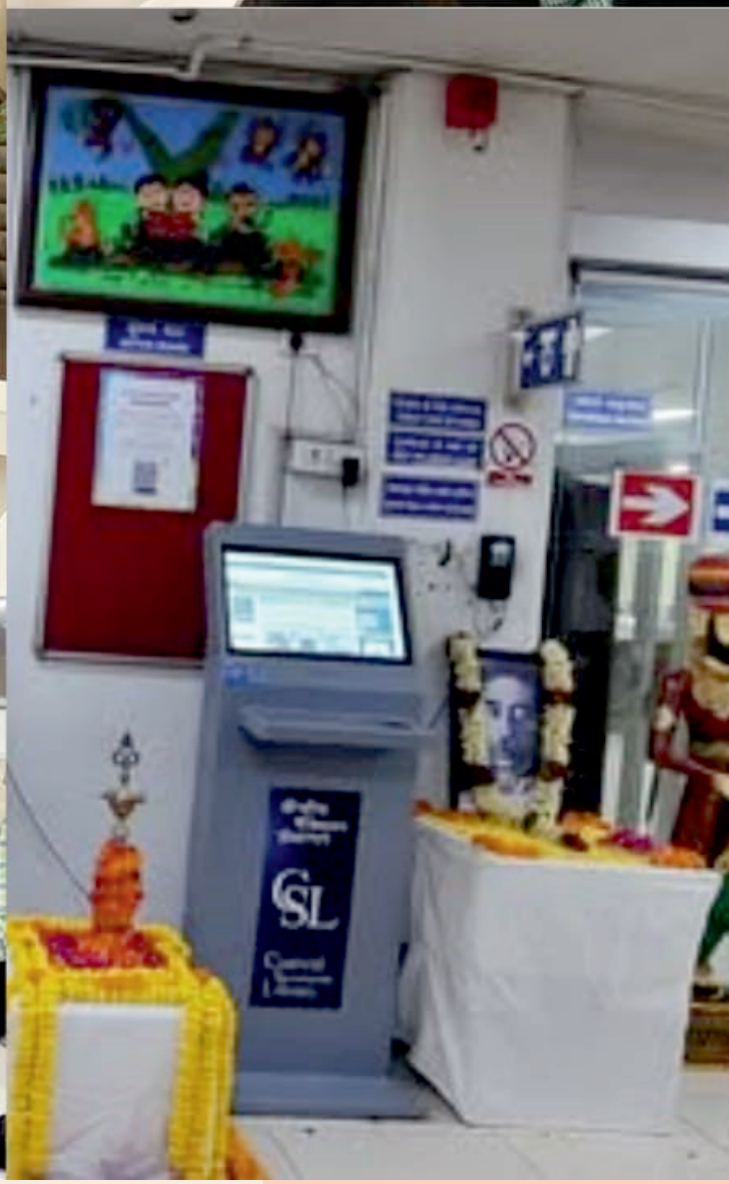
SL
Central Library


SL
Central Library

निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार का राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष श्री किशोर मकवाणा से शुभेक्षा मुलाक़ात

दिनांक 02 अगस्त, 2024 को डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (एन.सी.एस.सी.) के अध्यक्ष, श्री किशोर मकवाणा से शुभेच्छा मुलाकात की। यह मुलाकात एक सजीव और यादगार क्षण थी, जिसमें दोनों ने अतीत की यादें ताजा की और अपनी दोस्ती के अनुभव साझा किए।

समाज में न्याय, समानता और समरसता के लिए लगातार कार्य कर रहे श्री किशोर मकवाणा, ने डॉ. अजीत कुमार के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान किया और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा की। दोनों के बीच यह मुलाकात उनके लंबे समय के संबंधों को और मजबूत बनाने का अवसर थी।

इस दौरान, डॉ. अजीत कुमार ने श्री किशोर मकवाणा को उनके समाज सेवा के क्षेत्र में किए गए कार्यों के लिए बधाई दी और उनकी सक्रियता और नेतृत्व की सराहना की। श्री किशोर मकवाणा ने भी डॉ. अजीत कुमार के साथ अपनी मुलाकात के दौरान उनके कार्यों की सराहना की और पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के बारे में चर्चा की।

इस मुलाकात में दोनों ने भविष्य में एक-दूसरे के साथ सहयोग की संभावनाओं पर भी विचार किया ताकि समाज में बदलाव और सुधार की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

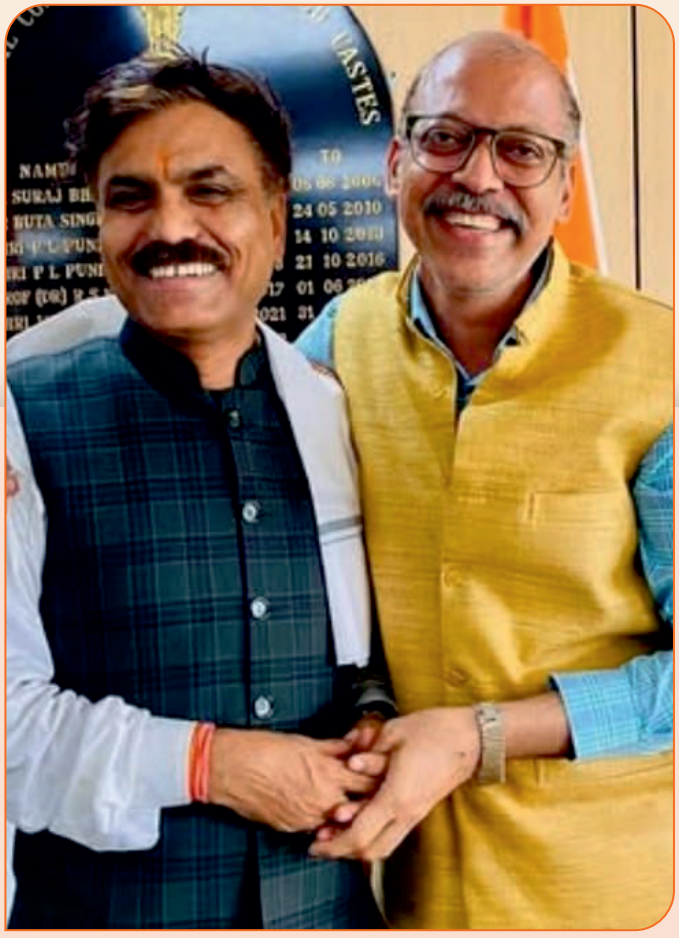



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में डॉ. एस.आर. रंगनाथन की जयंती और राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस का आयोजन

पद्मश्री डॉ. एस. आर. रंगनाथन के 132वीं जयंती के उपलक्ष्य में दिनांक 12 अगस्त, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस का आयोजन किया गया। डॉ. एस. आर. रंगनाथन, जिन्हें भारत के पुस्तकालय विज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है, उनके सम्मान में यह दिन समर्पित किया गया। इस अवसर पर पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में उनकी अमूल्य देन और उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री विनय प्रभाकर मिश्र, पुस्तकालय एवं सूचना सहायक ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार द्वारा मुख्य अतिथि श्री किशोर मकवाणा, अध्यक्ष राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, भारत सरकार और मुख्य वक्ता डॉ. राजेश सिंह, विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय को शॉल और पौधा देकर स्वागत करने से हुई। इसके बाद श्री मुनेश सेन, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी ने डॉ. अजीत कुमार का स्वागत किया।

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने अपने स्वागत भाषण में डॉ. एस. आर. रंगनाथन के जीवन, संघर्ष और उनके अद्वितीय योगदान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने डॉ. रंगनाथन के जीवन को एक प्रेरणादायक यात्रा के रूप में प्रस्तुत किया जो न केवल पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में बल्कि शिक्षा और ज्ञान की दुनिया में भी एक आदर्श माना जाता है। डॉ. अजीत कुमार ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि डॉ. एस. आर. रंगनाथन का जीवन केवल एक साधारण शिक्षक का नहीं था, बल्कि गणित के अध्यापक से पुस्तकालय विज्ञान के महान विद्वान बनने की अविस्मरणीय यात्रा थी। उन्होंने बताया कि किस प्रकार रंगनाथन ने अपनी गणितीय दृष्टि और तर्कशक्ति का उपयोग करते हुए पुस्तकालय विज्ञान में नए सिद्धांतों और प्रणालियों का विकास किया। उन्होंने विशेष रूप से उस समय की चर्चा की जब रंगनाथन ने अपनी गणितीय प्रतिभा के बावजूद पुस्तकालय विज्ञान को अपना करियर चुना जो उस समय एक अज्ञात और अल्पविकसित क्षेत्र था।

डॉ. अजीत कुमार ने इस बात पर भी जोर दिया कि कैसे पुस्तकालयों को डिजिटल युग में खुद को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है, ताकि वे उपयोगकर्ताओं की बदलती आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। उन्होंने बताया कि पुस्तकालय विज्ञान के पेशेवरों को न केवल पुस्तकालय की भौतिक संरचना पर ध्यान देना चाहिए, बल्कि डिजिटल संसाधनों, ऑनलाइन सेवाओं और ई-लर्निंग को भी अपने कार्यक्षेत्र में शामिल करना चाहिए।

डॉ. राजेश सिंह ने अपने भाषण की शुरुआत डॉ. एस. आर. रंगनाथन के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक गणित के अध्यापक से वे पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में आए और इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। डॉ. सिंह ने रंगनाथन की पुस्तकालयाध्यक्ष बनने की यात्रा को एक प्रेरणादायक कथा के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने संघर्षों, चुनौतियों और उनके द्वारा किए गए नवाचारों का जिक्र किया। डॉ. सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि डॉ. रंगनाथन एक आदर्श पुस्तकालयाध्यक्ष थे,

जिन्होंने अपने कार्य को महज नौकरी नहीं बल्कि एक मिशन के रूप में देखा। उनकी दृष्टि और समर्पण ने उन्हें पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में एक प्रकाशस्तंभ बना दिया। उन्होंने बताया कि डॉ. रंगनाथन ने जिस लगन और प्रतिबद्धता से काम किया, वह सभी पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए अनुकरणीय है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष, श्री किशोर मकवाणा जी थे। श्री किशोर मकवाणा जी ने अपने संबोधन में डॉ. एस. आर. रंगनाथन के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त करते हुए डॉ. रंगनाथन के योगदान को न केवल पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में, बल्कि समाज में व्यापक बदलाव के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण बताया। श्री मकवाणा जी ने अपने वक्तव्य में पुस्तकालयों को समाज का दर्पण बताते हुए कहा कि ये स्थान केवल पुस्तकों के भंडार नहीं हैं, बल्कि ज्ञान के स्रोत हैं जो समाज को प्रगति की दिशा में अग्रसर करते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समाज में समरसता और समानता की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि सभी वर्गों के लोगों की पुस्तकालयों तक पहुंच हो। उन्होंने बताया कि ज्ञान का प्रसार केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे समाज के हर कोने तक पहुँचाया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. वाई. ए. राव, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। उन्होंने मुख्य अतिथि श्री किशोर मकवाणा और डॉ. राजेश सिंह को अपना बहुमूल्य समय निकालकर कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने श्रीमती मुग्धा सिन्हा, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, को उनके अनवरत सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया और केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के समस्त कर्मचारियों को कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई दी। अंत में, उन्होंने सभा में उपस्थित, ऑनलाइन माध्यम से जुड़े सभी श्रोताओं का भी आभार व्यक्त किया।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने 01 अक्टूबर, 2024 को महात्मा गांधी जी की जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी, दीप प्रज्वलन और गांधीजी पर आधारित एक ग्रंथ सूची (बिब्लियोग्राफी) का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ, जिसे निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय श्री यशवीर सिंह, उपसचिव श्री एन.पी. शुक्ल और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने संयुक्त रूप से संपन्न किया।

इस अवसर पर महात्मा गांधी पर आधारित एक विशेष ग्रंथसूची का विमोचन किया गया। इस ग्रंथसूची में गांधीजी के जीवन, उनके संघर्षों और उनके सिद्धांतों से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों और लेखों का समावेश किया गया है। यह ग्रंथ सूची शोधार्थियों, शिक्षकों और गांधीवादी विचारधारा में रुचि रखने वालों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और स्वराज जैसे आदर्शों को जनसामान्य तक पहुंचाना और उनके विचारों को प्रासंगिक बनाए रखना था।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा विशेष अभियान 4.0 – स्वच्छता ही सेवा -2024 का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय ने विशेष अभियान 4.0 – स्वच्छता-ही-सेवा-2024 का आयोजन किया। इस अभियान के अंतर्गत 02 अक्टूबर, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रातः 08:00 बजे दिल्ली पुराना किला में श्रमदान के लिए उपस्थित हुए और *"एक पेड़ माँ के नाम"* वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार ने पुराना किला में एक पेड़ लगाया।

इसके पश्चात केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के सभी कर्मचारी एवं अधिकारी आर.के. पुरम शाखा में प्रातः 11:00 बजे एक विशेष स्वच्छता अभियान के लिए उपस्थित हुए। केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की आर. के. पुरम शाखा में एक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें पुस्तकालय के परिसर और आसपास की सफाई सुनिश्चित की गई एवं वहाँ भी *"एक पेड़ माँ के नाम"*अभियान के तहत पेड़ लगाए गए। इस अभियान के तहत केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के विभिन्न अनुभागों में विशेष स्वच्छता अभियान संचालित किया गया।

इस विशेष अभियान का उद्देश्य महात्मा गांधी के स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के संदेश को बढ़ावा देना था। यह आयोजन न केवल स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने का एक प्रयास था, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए सामूहिक प्रयास को प्रोत्साहित करने का भी महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। *"विशेष अभियान 4.0 – स्वच्छता ही सेवा-2024"* ने स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक सकारात्मक संदेश दिया। वृक्षारोपण और स्वच्छता गतिविधियों में सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय समुदाय के लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और इसे एक सफल आयोजन बनाया।









केन्द्रीय सरकारी पुस्तकालय संघ (सीजीएलए) द्वारा केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार को "Best Government Library Award 2024" सम्मान

केन्द्रीय सरकारी पुस्तकालय संघ (सीजीएलए) ने 17–19 अक्टूबर 2024 तक संवेत ऑडिटोरियम, आईजीएनसीए में "विकसित भारत के लिए धरोहर पर गर्व- पुस्तकालय और अभिलेखागार" विषय पर 5वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की तरफ से अधिकारियों ने भाग लिया। सम्मेलन में भारत सरकार से पुस्तकालय पेशेवरों के सुधार के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए।

सम्मेलन के दूसरे दिन "Best Government Library Award 2024" से केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार को सम्मानित किया गया, जो भारतीय सरकारी पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की गई असाधारण सेवाओं को मान्यता देने के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार डॉ. अजीत कुमार, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव, और श्री मुनेश सेन द्वारा ग्रहण किया गया।





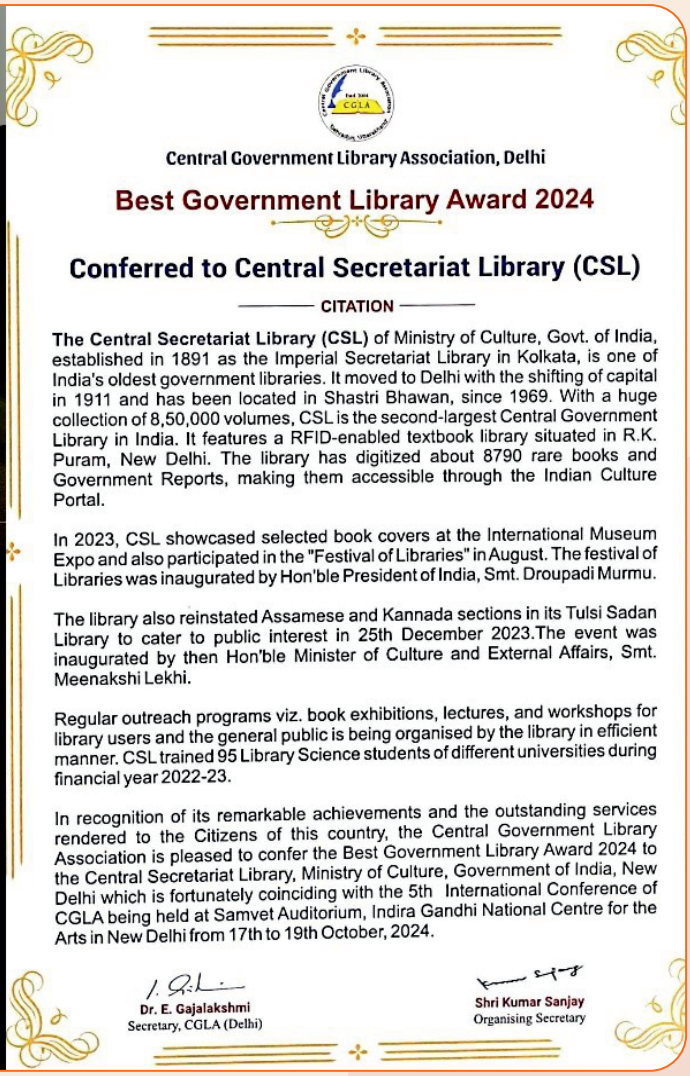
Central Government Library Association, Delhi

Best Government Library Award 2024

Conferred to Central Secretariat Library (CSL)

CITATION

The Central Secretariat Library (CSL) of Ministry of Culture, Govt. of India, established in 1891 as the Imperial Secretariat Library in Kolkata, is one of India's oldest government libraries. It moved to Delhi with the shifting of capital in 1911 and has been located in Shastri Bhawan, since 1969. With a huge collection of 8,50,000 volumes, CSL is the second-largest Central Government Library in India. It features a RFID-enabled textbook library situated in R.K. Puram, New Delhi. The library has digitized about 8790 rare books and Government Reports, making them accessible through the Indian Culture Portal.

In 2023, CSL showcased selected book covers at the International Museum Expo and also participated in the "Festival of Libraries" in August. The festival of Libraries was inaugurated by Hon'ble President of India, Smt. Droupadi Murmu.

The library also reinstated Assamese and Kannada sections in its Tulsi Sadan Library to cater to public interest in 25th December 2023.The event was inaugurated by then Hon'ble Minister of Culture and External Affairs, Smt. Meenakshi Lekhi.

Regular outreach programs viz. book exhibitions, lectures, and workshops for library users and the general public is being organised by the library in efficient manner. CSL trained 95 Library Science students of different universities during financial year 2022-23.

In recognition of its remarkable achievements and the outstanding services rendered to the Citizens of this country, the Central Government Library Association is pleased to confer the Best Government Library Award 2024 to the Central Secretariat Library, Ministry of Culture, Government of India, New Delhi which is fortunately coinciding with the 5th International Conference of CGLA being held at Samvet Auditorium, Indira Gandhi National Centre for the Arts in New Delhi from 17th to 19th October, 2024.

Dr. E. Gajalakshmi
Secretary, CGLA (Delhi)

Shri Kumar Sanjay
Organising Secretary

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस पर पुस्तक प्रदर्शनी एवं निगरानी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध इसके महत्व पर व्याख्यान

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में 30 अक्टूबर 2024 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन भारत की एकता, अखंडता और सरदार पटेल के योगदान को याद करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में सरदार पटेल के जीवन और उनके योगदान से संबंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में उनकी भूमिका को भारतीय राजनीति, समाज और स्वतंत्रता संग्राम में विस्तृत रूप से दर्शाया गया। यह प्रदर्शनी दर्शकों को उनके संघर्षों और दृष्टिकोणों से अवगत कराने का एक प्रभावी तरीका सिद्ध हुई। कार्यक्रम की शुरुआत में दीप प्रज्वलन किया गया। दीपों की रोशनी ने सरदार पटेल के मार्गदर्शन और उनके विचारों का स्मरण कराया।

इस कार्यक्रम में केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक, डॉ. अजीत कुमार ने सरदार पटेल के भारतीय एकता के लिए किए गए अभूतपूर्व प्रयासों पर प्रकाश डाला। डॉ. कुमार ने बताया कि सरदार पटेल ने भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया, जिसके कारण भारत आज एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा है। उनके योगदान के बिना भारतीय लोकतंत्र का अस्तित्व संभव नहीं हो सकता था।

इसके बाद संस्कृति मंत्रालय के निदेशक (सतर्कता विभाग), श्री यशवीर सिंह ने *"निगरानी और भ्रष्टाचार के खिलाफ इसके महत्व"* पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने निगरानी की भूमिका की व्याख्या करते हुए बताया कि, यह न केवल भ्रष्टाचार के खिलाफ एक प्रभावी उपाय है, बल्कि सरकारी संस्थाओं की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने में भी मदद करता है। उन्होंने यह भी बताया कि सूचना प्रौद्योगिकी (आई. टी.) उपकरणों का उपयोग निगरानी को और अधिक प्रभावी बना सकता है जिससे भ्रष्टाचार पर काबू पाया जा सकता है।

यह आयोजन संस्कृति मंत्रालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। कार्यक्रम ने सभी में एकता, पारदर्शिता और जागरूकता की भावना को बढ़ावा दिया। विशेष रूप से सरदार पटेल के योगदान को याद करते हुए, सभी ने उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया। इस कार्यक्रम ने एक ओर जहां सरदार पटेल के योगदान को व्यापक रूप से सम्मानित किया, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र की एकता और भ्रष्टाचार के विरुद्ध निगरानी के महत्व पर भी चर्चा की, जो आज की आवश्यकता है। यह आयोजन एक सकारात्मक संदेश के साथ समाप्त हुआ, जिससे सभी को एकजुट होने और भ्रष्टाचार से लड़ने की प्रेरणा मिली।

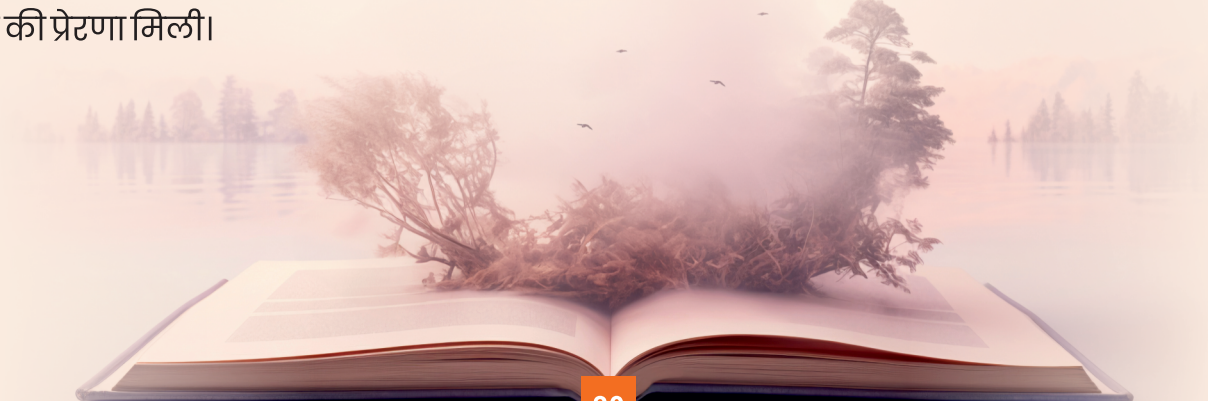



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा 20-21 नवम्बर 2024 को "कला, संस्कृति और वास्तुकला" विषय पर दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी और व्याख्यान का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा 20 से 21 नवम्बर, 2024 को "कला, संस्कृति और वास्तुकला" विषय पर दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी और व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी, व्याख्यान श्रृंखला और दीप प्रज्वलन शामिल था। कार्यक्रम में दुर्लभ पुस्तकों की एक विशिष्ट प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें कला, संस्कृति और वास्तुकला से संबंधित महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक दस्तावेजों को प्रदर्शित किया गया। इन पुस्तकों का संग्रह भारतीय और वैश्विक इतिहास, संस्कृति और विज्ञान की गहरी अंतर्दृष्टि को उजागर करता है।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री संजय कौल, भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। उन्होंने कार्यक्रम के महत्व पर जोर दिया और इसे सांस्कृतिक धरोहर और ज्ञान के प्रसार के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बताया। तत्पश्चात श्री संजय कौल, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं इसे काफी सराहा। संयुक्त सचिव महोदय ने ऐसी और पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, डॉ. अजीत कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि दुर्लभ पुस्तकें न केवल हमारे इतिहास को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे शैक्षिक कार्य को बढ़ावा देने और वैश्विक समझ को विस्तृत करने में भी अहम भूमिका निभाती हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से हमें दुनिया को समझने के नए दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं।

मुख्य अतिथि केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के पूर्व निदेशक और आईजीएनसीए में कला निधि विभाग के पूर्व प्रमुख, डॉ. प्रकृति रंजन गोस्वामी ने भी इस अवसर पर भाषण दिया। उन्होंने कहा कि दुर्लभ पुस्तकें केवल अपनी दुर्लभता के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं होतीं, बल्कि ये गहरी बौद्धिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जानकारियों से भरी होती हैं। ऐसी पुस्तकें अनमोल धरोहर होती हैं, जो हमारे ज्ञान को और अधिक समृद्ध करती हैं।

इस कार्यक्रम में संस्कृति मंत्रालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति रही, जिन्होंने इस आयोजन के महत्व को और अधिक उजागर किया। यह आयोजन एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसके द्वारा संस्कृति, कला, और वास्तुकला के क्षेत्र में दुर्लभ और महत्वपूर्ण पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया और उनके महत्व को समाज के साथ साझा किया गया।









केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में 26 नवम्बर, 2024 को संविधान दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में 26 नवम्बर, 2024 को संविधान दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन के साथ संविधान से संबंधित पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. अजीत कुमार, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक और पुस्तकालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर संविधान के महत्व को उजागर करते हुए, डॉ. अजीत कुमार ने संविधान के महत्व और उसके द्वारा प्रदान की गई स्वतंत्रता, समानता और न्याय के सिद्धांतों के बारे में जागरूकता फैलाने पर बल दिया।

कार्यक्रम के दौरान संविधान से संबंधित पुस्तकें प्रदर्शित की गईं और दीप प्रज्वलन की प्रक्रिया से कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इसके अतिरिक्त, इस दिन के महत्व को चिह्नित करने के लिए एक ग्रंथसूची (बिब्लियोग्राफी) भी प्रकाशित की गई जो संविधान से संबंधित पुस्तकों और संसाधनों का संकलन थी।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांक 25 दिसम्बर, 2024 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के ऊपर एक ग्रंथ सूची भी जारी की गयी। अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के एक प्रभावशाली नेता और राजनेता थे, जिन्होंने अपने तीन अलग-अलग कार्यकालों में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की। वे भारतीय राजनीति के एक सम्मानित और आदर्श नेता थे, जिन्होंने अपनी वाक्पटुता, राजनीतिक कुशलता और आधुनिक भारत के विकास में योगदान के लिए ख्याति प्राप्त की।

उनके राष्ट्रीय योगदान के लिए उन्हें 2015 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था, जो भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। इस प्रदर्शनी में उनके जीवन और कार्यों से संबंधित पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया, जो उनके योगदान को और अधिक समझने में मदद करती हैं।

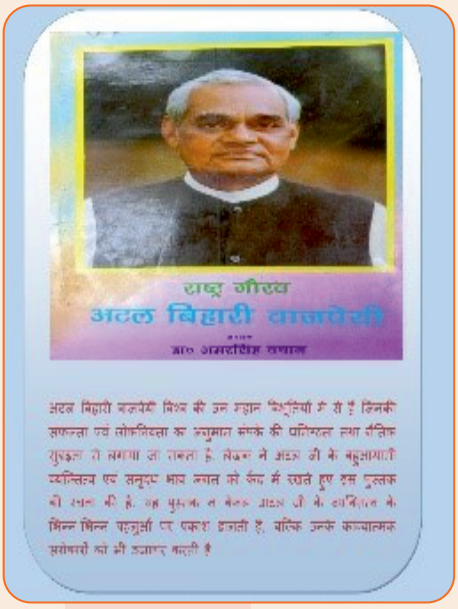

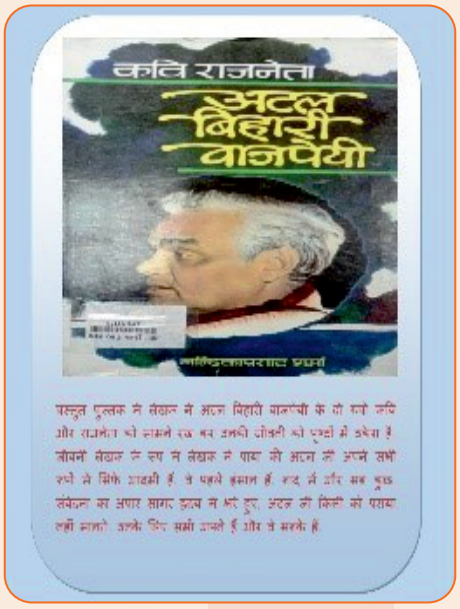

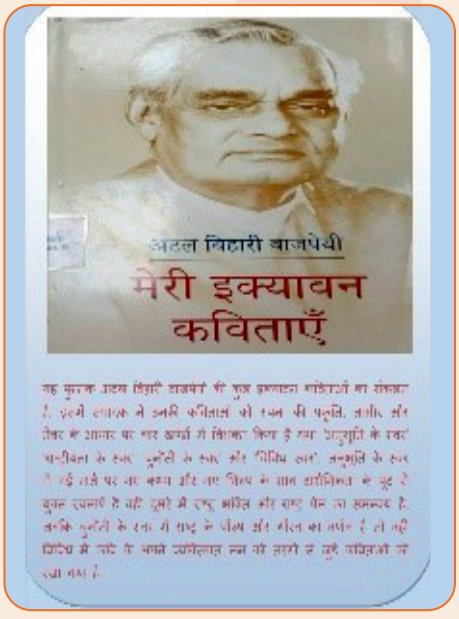

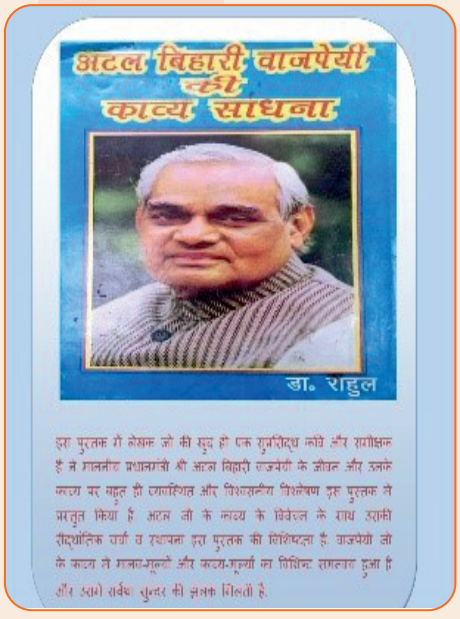

स्मारिका 2025

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के कार्यक्रमों और कार्यकलापों पर सचित्र विस्तृत रिपोर्ट

संग्रह विकास

भारतीय आधिकारिक दस्तावेज अनुभाग में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों से प्रकाशित 140 सरकारी प्रकाशन शामिल किए गए हैं। पुस्तकालय में 649 नई पुस्तकें खरीदी गईं और 282 पुस्तकों को उपहार स्वरूप प्राप्त किया गया। इस प्रकार, पुस्तकालय में कुल 1071 नए शीर्षकों को अपने संग्रह में शामिल किया गया।

समाचार पत्र और पत्रिकाएँ

पुस्तकालय में वर्ष भर में 37 पत्रिकाओं/ सावधिक पत्रिकाओं और 19 भारतीय समाचार पत्रों को खरीदा गया। साथ ही, 22 पत्रिकाएं पुस्तकालय में उपहार स्वरूप प्राप्त हुईं।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा जनवरी से दिसम्बर 2025 तक आयोजित कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों की विस्तृत रिपोर्ट

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की आर.के. पुरम शाखा पुस्तकालय में "इनसाइट्स एंड स्ट्रैटेजीज" कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 10 जनवरी 2025 को आर.के. पुरम शाखा पुस्तकालय में "*विचार एवं कार्यनीति: सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी*" के अंतर्गत परीक्षा तनाव के मनोवैज्ञानिक पहलू और इसका प्रबंधन *("Psychological Aspects of Exam Stress and Its Management")* विषय पर एक प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के विषय विशेषज्ञ के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कॉलेज के मनोविज्ञान विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत डॉ. मितू खोसला ने अपनी गहन विशेषज्ञता साझा की। कार्यक्रम में डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही, आर.के. पुरम शाखा के लगभग 100 उपयोगकर्ताओं ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया।

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने परीक्षा की तैयारी के दौरान उत्पन्न होने वाले तनाव को समझने और उससे बचने के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान किए। डॉ. मितू खोसला ने परीक्षा के दौरान होने वाले तनाव और उससे निपटने के विभिन्न तरीकों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने उपयोगकर्ताओं को पढ़ाई के दौरान ध्यान केंद्रित करने, प्रभावी अध्ययन तकनीकों को अपनाने और मानसिक तनाव को कम करने के उपाय बताए। तनाव दूर करने के लिए ध्यान (मेडिटेशन) और रिलैक्सेशन तकनीकों का प्रदर्शन किया गया, जिन्हें उपयोगकर्ताओं ने बड़े ध्यान से सीखा। उपस्थित उपयोगकर्ताओं ने डॉ. खोसला से तनाव प्रबंधन और संबंधित विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका उन्होंने विस्तार से उत्तर दिया।



Ministry of Culture
Government of India

Ministry of Culture
Central Secretariat Library
Insights & Strategies :
Civil Services Exam Preparation

Join us for a discussion
with a leading Psychologist:

Prof. Meetu Khosla

Daulat Ram College, Delhi University,
New Delhi

January 10th, 2025
11:00 AM

Central Secretariat Library
R K Puram Branch (Text Book)
Sector-1, R K Puram, New Delhi







केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा वैश्विक पुस्तकालय शिखर सम्मेलन – 2025 में विशेष अतिथि के रूप में प्रतिभागिता

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार और महानिदेशक दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, संस्कृति मंत्रालय ने वैश्विक पुस्तकालय शिखर सम्मेलन – 2025 में विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया। शिखर सम्मेलन का विषय *"पुस्तकालय कूटनीतिज्ञता: पुस्तकालय सहयोग के माध्यम से देशों को एकजुट करना"* था (5-7 फरवरी, 2025)। इस शिखर सम्मेलन का आयोजन दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अकादमी, बेंगलुरु ने 7 फरवरी, 2025 को किया था।







प्रधानमंत्री द्वारा परीक्षा पर चर्चा 2025

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के सम्मेलन कक्ष में पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं ने माननीय प्रधानमंत्री द्वारा *"परीक्षा पर चर्चा 2025"* के रोमांचक संस्करण में छात्रों के साथ किए गए प्रेरणादायक संवाद को देखा। उन्होंने इसे अपनी आगामी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अत्यंत उपयोगी एवं मार्गदर्शक बताया। इस संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों को तनावमुक्त रहकर आत्मविश्वास के साथ अध्ययन करने, समय प्रबंधन एवं सकारात्मक सोच अपनाने की प्रेरणा मिली, जो उनके शैक्षणिक जीवन में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगी।





केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में कोहा सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण सत्र का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने अपने कर्मचारियों के कौशल विकास के उद्देश्य से 13 एवं 14 फरवरी 2025 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार सम्मेलन कक्ष में दो-दिवसीय *"कोहा सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण"* सत्र का आयोजन किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 13 फरवरी, 2025 को डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, श्री एन.पी. शुक्ला, उप सचिव (संस्कृति मंत्रालय); तथा बेस्ट बुक बडीज़ के सीईओ श्री सुधीर गंधोत्रा की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ।

प्रशिक्षण के प्रथम दिन श्री सुनील कुमार, सुश्री काजल एवं सुश्री सृष्टि द्वारा कोहा सॉफ्टवेयर का परिचय प्रस्तुत किया गया। इस दौरान सॉफ्टवेयर के प्रमुख मॉड्यूल—ओपीएसी, प्रशासन, ग्रंथसूची अभिलेख परिसंचरण तथा रिपोर्ट्स—पर विस्तार से जानकारी दी गई।

द्वितीय दिन, 14 फरवरी, 2025 को एक्विज़िशन, सीरियल्स तथा कोहा टूल्स जैसे अतिरिक्त मॉड्यूल्स पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे प्रतिभागियों को सॉफ्टवेयर की समग्र समझ प्राप्त हुई।

कार्यक्रम का समापन 14 फरवरी, 2025 को हुआ, जिसमें नीति आयोग लाइब्रेरी के निदेशक श्री कुमार संजय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समापन अवसर पर डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने अपना संबोधन दिया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वाई. ए. राव, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा प्रस्तुत किया गया।





केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने 19 फरवरी, 2025 को छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती के पावन अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी एवं दीप प्रज्वलन से समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य, नेतृत्व, राष्ट्रभक्ति एवं दूरदर्शी प्रशासन से संबंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे उनके जीवन और विचारों से प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर मिला। कार्यक्रम में डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने ग्रंथागार के कर्मचारियों, सदस्यों के साथ सहभागिता की तथा छत्रपति शिवाजी महाराज के आदर्शों को आत्मसात करने पर बल दिया। यह आयोजन उपस्थित सभी जनों के लिए प्रेरणास्रोत एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ।





पूर्व अपर सचिव, लोकसभा द्वारा केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार का दौरा

प्रोफेसर (डॉ.) रविंदर कुमार चड्ढा, पूर्व अपर सचिव, भारतीय संसद (लोकसभा), ने 27 फरवरी, 2025 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार का सौजन्य पूर्ण दौरा किया। इस दौरान उन्होंने पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जा रही प्रमुख सेवाओं, संसाधनों एवं आधुनिक सुविधाओं का गहन अवलोकन किया तथा उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। उनके साथ यह भेंट ग्रंथागार की शैक्षणिक एवं शोधपरक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर सिद्ध हुई।



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा लेखक मिलन और पुस्तक परिचर्चा का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा 4 मार्च, 2025 को पठन कक्ष (रीडिंग हॉल) में *"स्वामी विवेकानंद: द सेज एंड रिवोल्यूशनरी"* विषय पर लेखक मिलन एवं पुस्तक परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. टी. एन. सिंह, निदेशक (आईआईटीपी) द्वारा की गई। श्री के. सतीश नंबुदिरीपाद, महानिदेशक, दूरदर्शन, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के सम्मानित अतिथियों में डॉ. ओम जी. उपाध्याय, सदस्य सचिव (कार्यवाहक), भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) तथा डॉ. रामानंद मालवीय, विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष एवं प्रॉक्टर शामिल थे।

कार्यक्रम में प्रतिष्ठित वक्ताओं के रूप में डॉ. सुधीर सिंह, सह-प्राध्यापक राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज तथा डॉ. सुबु थॉमस, प्रोफेसर, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज, मडप्पल्ली वडाकरा ने स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचारों, राष्ट्रनिर्माण में उनके योगदान एवं युवाओं के लिए उनकी प्रासंगिकता पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का स्वागत भाषण डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा दिया गया। उन्होंने अपने संबोधन में स्वामी विवेकानंद के विचारों को आज के सामाजिक, शैक्षणिक एवं नैतिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक बताया। कार्यक्रम में उपस्थित विद्वानों, शोधार्थियों एवं पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं ने सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई। यह आयोजन विचारोत्तेजक, प्रेरणादायक एवं बौद्धिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध सिद्ध हुआ।







डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार (सीएसएल), को 07 मार्च 2025 को आयोजित *पैनल परिचर्चा–III* में *"भारत में डिजिटाइजेशन परियोजनाओं के लिए निधियन परिदृश्य"* विषय पर पैनलिस्ट के रूप में आमंत्रित किया गया।

यह संगोष्ठी *"भारत में सांस्कृतिक विरासत एवं स्कॉलरशिप का डिजिटाइजेशन: खोज और संरक्षण को सुदृढ़ करना"* विषय पर J-STOR, इथाका, अमेरिका द्वारा, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के कला निधि प्रभाग के सहयोग से आईजीएनसीए, नई दिल्ली में आयोजित की गई।



संग्रह विकास समिति की बैठक का आयोजन

दिनांक 10 मार्च, 2025 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में हिंदी एवं अंग्रेज़ी पुस्तकों के संग्रह को और अधिक समृद्ध करने के उद्देश्य से संग्रह विकास समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का शुभारंभ प्रो. (डॉ.) रमेश चंद्र गौड़, डीन, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, डॉ. राजेश सिंह, विश्वविद्यालय पुस्तकालय अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय; डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार; तथा सुश्री छाया शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष, अमेरिकन सेंटर लाइब्रेरी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

इस अवसर परसंग्रह विकास समिति के सभी सम्मानित सदस्य एवं केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान पाठकों की आवश्यकताओं, समकालीन विषयों तथा शैक्षणिक एवं शोधपरक मांगों को ध्यान में रखते हुए नवीन पुस्तकों के चयन एवं संग्रह संवर्धन पर महत्वपूर्ण विचार-विमर्श किया गया। यह बैठक ग्रंथागार की सेवाओं की गुणवत्ता को और सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई।





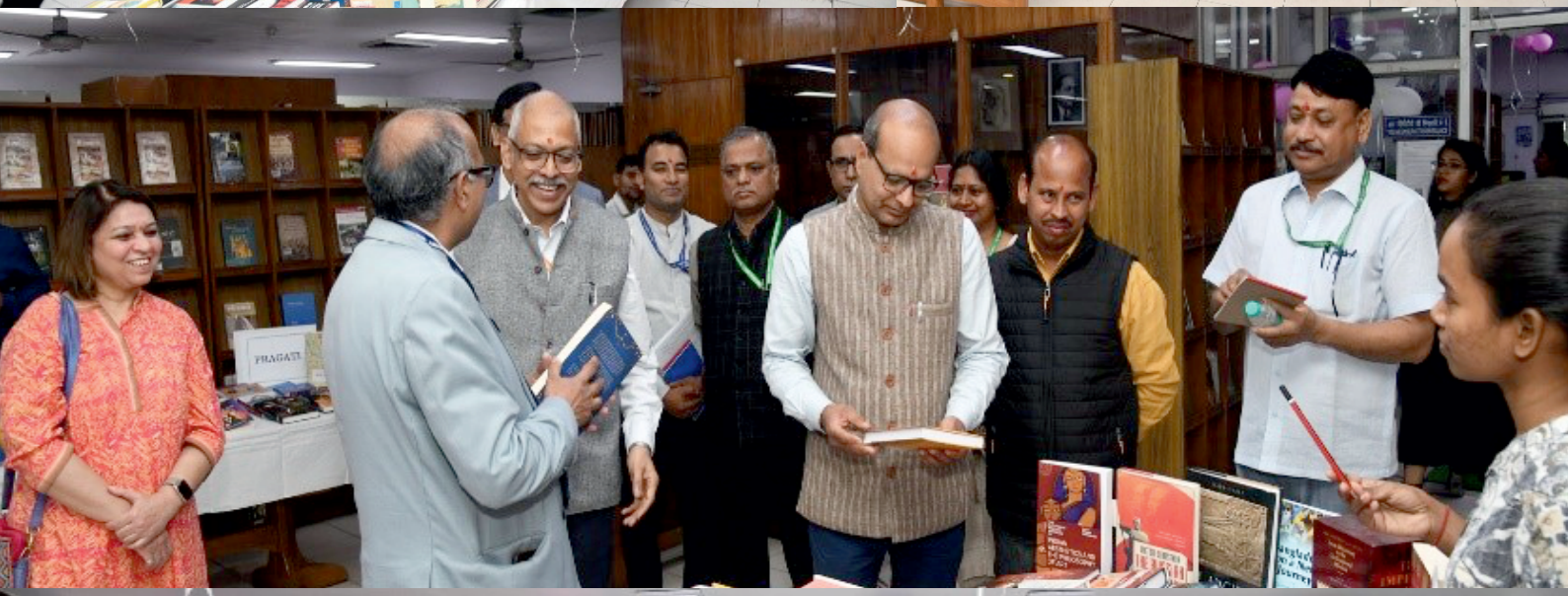

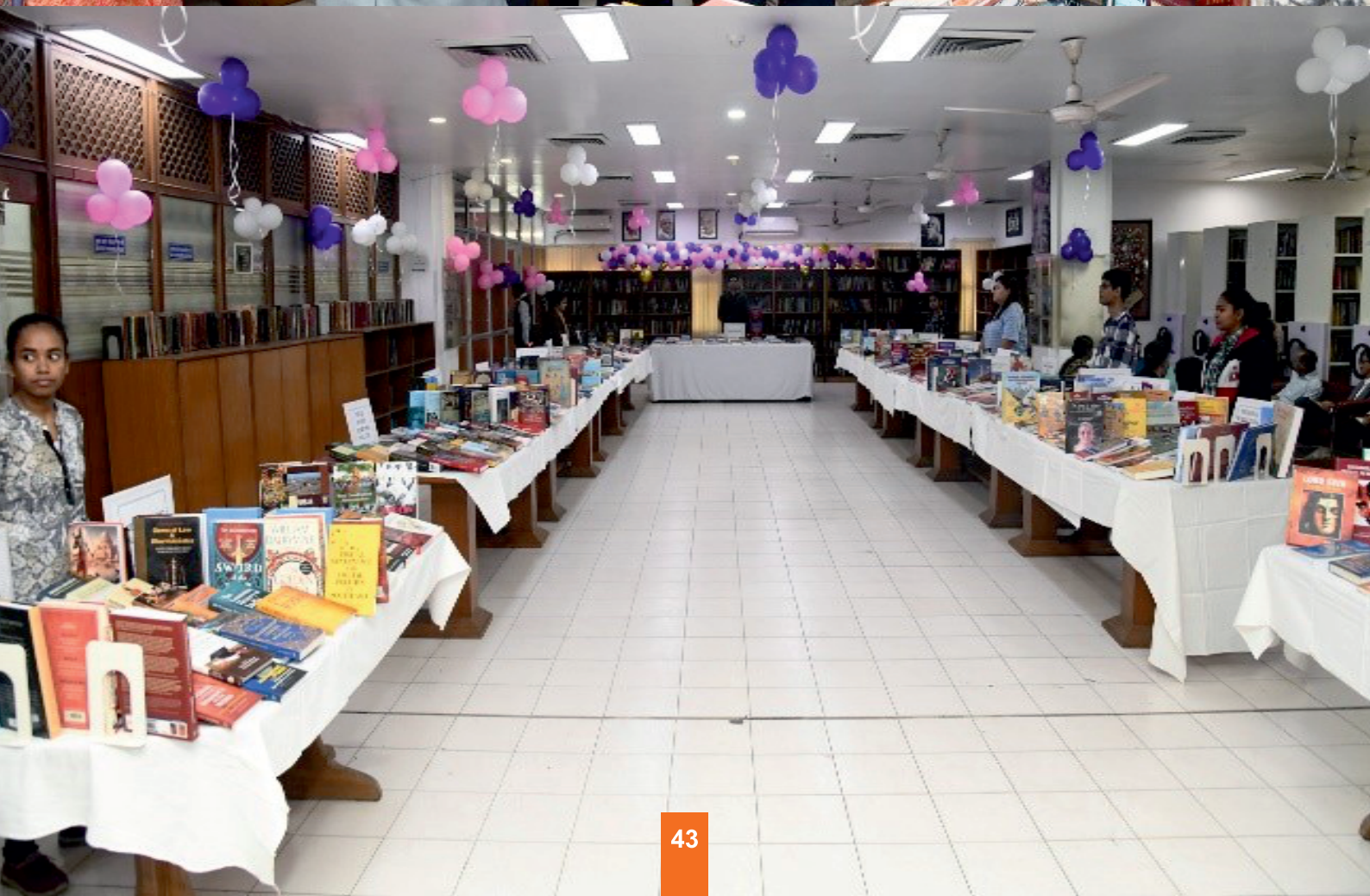

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में तुलसी सदन पुस्तकालय का हिंदी अनुभाग पाठकों के अध्ययन हेतु पुनः खोला गया।

तुलसी सदन पुस्तकालय के हिंदी अनुभाग को 11 मार्च, 2025 को पाठकों के अध्ययन हेतु पुनः खोला गया। इसका विधिवत उद्घाटन प्रोफेसर बन्दना झा, अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन स्कूल , जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री दलपत सिंह, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय तथा श्री अनीश पी. राजन, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय, सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आयोजन डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि तुलसी सदन पुस्तकालय वर्ष 2010 से दिल्ली मेट्रो के निर्माण कार्य के कारण निष्क्रिय था। इसके पुनः संचालन से हिंदी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के अध्ययन को नई गति मिलेगी तथा पाठकों, शोधार्थियों और साहित्य प्रेमियों को एक अनुकूल अध्ययन वातावरण प्राप्त होगा। यह पहल ज्ञान के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुई।









केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के वियतनाम कॉर्नर में वियतनाम के एकीकरण की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित स्मारक पुस्तक भेंट समारोह।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, नई दिल्ली ने 24 अप्रैल, 2025 को दक्षिण की मुक्ति और वियतनाम के एकीकरण की 50वीं वर्षगांठ (30 अप्रैल, 1975 – 30 अप्रैल, 2025) के उपलक्ष्य में वियतनाम कॉर्नर में एक विशेष स्मारक पुस्तक भेंट समारोह का आयोजन किया। यह आयोजन वियतनाम के ऐतिहासिक संघर्ष, राष्ट्रीय एकता और शांति की भावना को स्मरण करने हेतु समर्पित था।

इस अवसर पर भारत में वियतनाम दूतावास के राजदूत महामहिम श्री गुयेन थान हाई कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनके साथ श्री ट्रान थान तुंग, काउंसलर एवं राजनीतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक अनुभाग के प्रमुख तथा सुश्री टोन खान लिन्ह, अटैची एवं दूतावास की मीडिया और संस्कृति अधिकारी भी उपस्थित थीं। प्रतिनिधिमंडल में 'वॉइस ऑफ वियतनाम' के दो पत्रकार तथा वियतनाम समाचार एजेंसी के दो पत्रकारों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी गरिमा प्रदान की।

कार्यक्रम के माध्यम से भारत-वियतनाम के ऐतिहासिक मैत्रीपूर्ण संबंधों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं पारस्परिक समझ को सुदृढ़ करने का संदेश दिया गया। यह समारोह ग्रंथागार की अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं ज्ञान संवर्धन की प्रतिबद्धता को दर्शाने वाला एक अविस्मरणीय अवसर सिद्ध हुआ।







केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस का आयोजन

दिनांक 12 अगस्त, 2025 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ. एस. आर. रंगनाथन की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी, व्याख्यान तथा दीप प्रज्वलन कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य पुस्तकालयों के महत्व और पठन संस्कृति को प्रोत्साहित करना था।

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने अपने संबोधन में भारत में पुस्तकालयों के विकास हेतु डॉ. एस. आर. रंगनाथन के अटूट समर्पण, उनके पंचसूत्रीय सिद्धांतों तथा दूरदर्शी विचारों पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) रमेश चंद्र गौड़ ने आज के डिजिटल युग में पुस्तकालयों की निरंतर प्रासंगिकता, उनकी बदलती भूमिका तथा पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. रंगनाथन के अमूल्य योगदान को रेखांकित किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुश्री लिली पांडेया, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने कहा कि पुस्तकालय समाज के सबसे सुरक्षित और समावेशी स्थलों में से एक हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र रूप से पढ़ने, सीखने और ज्ञान अर्जित करने का आनंद ले सकता है। विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रियंका चंद्रा, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में विद्वानों, पुस्तकालय पेशेवरों, शोधार्थियों एवं पाठकों की सक्रिय सहभागिता रही। यह आयोजन पठन-पाठन की संस्कृति को सुदृढ़ करने तथा डॉ. एस. आर. रंगनाथन की विरासत को सम्मानपूर्वक स्मरण करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं स्मरणीय प्रयास सिद्ध हुआ।




Central Secretariat Library
On occasion
and


Central Secretariat Library
On occasion of
Dr. S.R. Ranganathan Birth Anniversary
and
National Librarian's Day
Lecture and Book Display


Central Secretariat Library
On occasion of
Dr. S.R. Ranganathan Birth Anniversary
and
National Librarian's Day
Lecture and Book Display


Central Secretariat Library
On occasion of

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 11-13 सितंबर, 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में "पांडुलिपि विरासत के माध्यम से भारत की ज्ञान विरासत का पुनः प्रापण" विषय पर ज्ञान भारतम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय, *वर्किंग ग्रुप-2* के समन्वयक थे जिसका विषय: *सर्वेक्षण, दस्तावेज़ीकरण, मेटा डेटा मानक और डिजिटल अभिलेखागार* था। इसके अतिरिक्त, डॉ. अजीत कुमार ने 11 सितंबर, 2025 को अकादमिक सत्र-1 में *पांडुलिपि विरासत के माध्यम से ज्ञान विरासत* की सह-अध्यक्षता भी की।

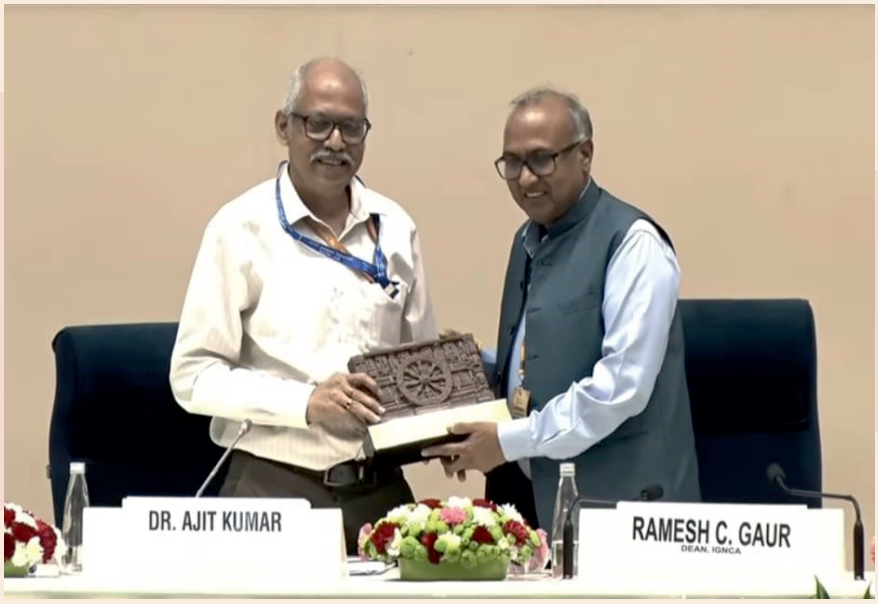

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर 08 अक्टूबर, 2025 को एक व्याख्यान का आयोजन

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि सतर्कता केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि हमारी साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि ईमानदारी और पारदर्शिता से ही एक सशक्त एवं उत्तरदायी व्यवस्था का निर्माण संभव है तथा प्रत्येक नागरिक की जागरूकता भ्रष्टाचार के विरुद्ध सबसे मजबूत हथियार है। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि हम सतर्क रहकर अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करें और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान दें।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री राकेश सिन्हा ने सतर्कता के महत्व, नैतिक मूल्यों तथा प्रशासनिक पारदर्शिता पर अपने विचार साझा करते हुए व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किए। इस अवसर पर माननीय अतिथि श्री अनीश पी. राजन, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की महत्ता को और बढ़ाया।

कार्यक्रम में अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता रही। यह आयोजन सतर्कता के प्रति जागरूकता बढ़ाने, नैतिक कार्य संस्कृति को सुदृढ़ करने तथा उत्तरदायी प्रशासन की भावना को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक प्रयास सिद्ध हुआ।




केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार
Central Secretariat Library
सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर व्याख्यान
"सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी"



केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा विशेष अभियान 5.0 – स्वच्छता ही सेवा - 2025 का आयोजन

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने स्वच्छता पर विशेष अभियान 5.0 के अंतर्गत 26 अक्तूबर, 2025 को स्वच्छता एवं पौधारोपण अभियान का आयोजन किया। इस अभियान में डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के साथ सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रातः 11:00 बजे आर. के. पुरम शाखा में एक विशेष स्वच्छता अभियान हेतु उपस्थित हुए।

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की आर. के. पुरम शाखा में चलाए गए इस विशेष अभियान के दौरान पुस्तकालय परिसर एवं उसके आसपास के क्षेत्रों की गहन सफाई सुनिश्चित की गई, जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई। साथ ही, पौधारोपण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया।

इस विशेष अभियान का उद्देश्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वच्छता, स्वावलंबन एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना था। यह आयोजन न केवल स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने का एक सार्थक प्रयास रहा, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने हेतु सामूहिक उत्तरदायित्व और सहभागिता की भावना को भी सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।





केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस पर पुस्तक प्रदर्शनी

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार ने 31 अक्तूबर, 2025 को लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर सरदार पटेल के जीवन, विचारों और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता में उनके अमूल्य योगदान पर आधारित 28 पुस्तकों की विशेष प्रदर्शनी लगाई गई।

प्रदर्शित पुस्तकों की ग्रंथ सूची का विमोचन केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के निदेशक डॉ. अजीत कुमार द्वारा किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में सरदार वल्लभभाई पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व, दृढ़ संकल्प और राष्ट्रीय एकता के प्रति उनके समर्पण को स्मरण करते हुए युवाओं एवं पाठकों को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के निदेशक श्री जी. वेंकट सुब्बैया तथा केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार के अधिकारियों की सक्रिय सहभागिता रही। यह आयोजन राष्ट्रीय एकता, अखंडता और देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करने वाला एक प्रेरणादायक एवं स्मरणीय अवसर सिद्ध हुआ।





"सरकारी पुस्तकालयों की पुनर्कल्पना: बेहतर पहुंच और उपयोग के रास्ते" विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन

केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय, संस्कृति मंत्रालय द्वारा 12 नवंबर, 2025 को एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव डॉ. अरविंद कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में पैनल चर्चा की शोभा बढ़ाई। नीति आयोग के निदेशक (पुस्तकालय) डॉ. कुमार संजय तथा विदेश मंत्रालय के निदेशक (पुस्तकालय) श्री रमेश येरनागुला विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। पैनल चर्चा का संचालन डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. अरविंद कुमार ने वर्णनात्मक सूचीकरण की उपयोगिता तथा पुस्तकालयों में दिव्यांगजन हेतु विशेष कॉर्नर स्थापित करने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए समावेशी पुस्तकालय सेवाओं की आवश्यकता को रेखांकित किया। डॉ. कुमार संजय ने सरकारी पुस्तकालयों के एकीकृत नेटवर्क की स्थापना पर बल देते हुए संसाधन साझा करने और सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं श्री रमेश येरनागुला ने डिजिटल गवर्नेंस, प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग एवं क्षमता निर्माण से जुड़ी पहलों पर अपने विचार साझा किए।

डॉ. अजीत कुमार ने अपने समापन भाषण में ज्ञान के आदान-प्रदान, कौशल विकास और संस्थागत सुदृढ़ीकरण के लिए सरकारी पुस्तकालयों के मध्य सहयोगात्मक कार्मिक विनिमय कार्यक्रम की आवश्यकता को रेखांकित किया। कार्यक्रम में विभिन्न मंत्रालयों के पुस्तकालय पेशेवरों की सक्रिय सहभागिता रही। यह पैनल चर्चा सरकारी पुस्तकालयों को अधिक आधुनिक, समावेशी एवं सहयोगात्मक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और उपयोगी पहल सिद्ध हुई।

अंत में, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ. वाई. ए. राव ने सभी उपस्थित अतिथियों, श्रोताओं और आयोजन में सहयोग करने वाले कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने विशेष रूप से डॉ. अजीत कुमार और मुख्य अतिथि डॉ. अरविंद कुमार का धन्यवाद किया जिन्होंने अपने विचारों और अनुभवों से कार्यक्रम को सार्थक और प्रेरणादायक बनाया।




केंद्रीय सचिवालय संग्रहालय
Central Secretariat Library
CSL




Dr A K Suman


केंद्रीय सचिवालय संग्रहालय
Central Secretariat Library

नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन स्कूल लाइब्रेरी (एनसीएसएल-2025)

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को 11 नवंबर, 2025 को एनसीईआरटी, *नई दिल्ली* में आयोजित *नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन स्कूल लाइब्रेरी (एनसीएसएल-2025)* (11-12 नवंबर, 2025) में स्रोत व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया।

डॉ. कुमार ने *"स्कूल लाइब्रेरी में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन और आईसीटी इंटीग्रेशन"* तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में स्कूल लाइब्रेरी की वर्तमान स्थिति, विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों को सुधारने के उपाय और पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली में *आईसीटी* के उपयोग पर *सात शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।*



रूसी प्रतिनिधिमंडल के साथ द्विपक्षीय बैठक

डॉ. अजीत कुमार, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार तथा श्री यशवीर सिंह, निदेशक, संस्कृति मंत्रालय ने 14 नवंबर, 2025 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में रूसी प्रतिनिधिमंडल के साथ एक द्विपक्षीय बैठक की। रूसी प्रतिनिधिमंडल में श्री यूरी नोसोव, निदेशक (प्रेसिडेंशियल लाइब्रेरी), सुश्री वलेरिया मालाखोव्स्काया, श्री मैक्सिम चेर्नोव तथा सुश्री एकातेरिना डायनक शामिल थे।

बैठक का उद्देश्य पुस्तकालय क्षेत्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करना था, जिसमें डिजिटल संसाधनों का आदान-प्रदान, संग्रह संवर्धन, आधुनिक पुस्तकालय सेवाओं तथा पेशेवर प्रशिक्षण एवं क्षमता-निर्माण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल रहे।

इस बैठक के माध्यम से भारत और रूस के बीच पुस्तकालय सहयोग को सुदृढ़ करने, ज्ञान एवं सूचना के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग बढ़ाने तथा भविष्य में संयुक्त पहलों की संभावनाओं पर सकारात्मक चर्चा हुई। यह संवाद अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालय सहयोग को नई दिशा देने वाला एक महत्वपूर्ण और सार्थक प्रयास सिद्ध हुआ।





केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

दिनांक 25 दिसंबर, 2025 को केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन, विचारों और राष्ट्र के प्रति उनके अतुलनीय योगदान से संबंधित पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया तथा उनकी उपलब्धियों पर आधारित एक ग्रंथ सूची भी जारी की गई।

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के एक प्रभावशाली एवं दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने तीन अलग-अलग कार्यकालों में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा की। वे अपनी वाक्पटुता, राजनीतिक कुशलता, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति निष्ठा तथा आधुनिक भारत के निर्माण में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे। राष्ट्र के प्रति उनके असाधारण योगदान को सम्मानित करते हुए उन्हें वर्ष 2015 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया।

यह प्रदर्शनी उनके जीवन, कृतित्व और विचारधारा को गहराई से समझने का एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुई। साथ ही, इसने युवाओं, शोधार्थियों एवं पाठकों को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को स्मरण करने का अवसर प्रदान किया। यह आयोजन केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक प्रतिबद्धता को दर्शाने वाला एक स्मरणीय प्रयास रहा।

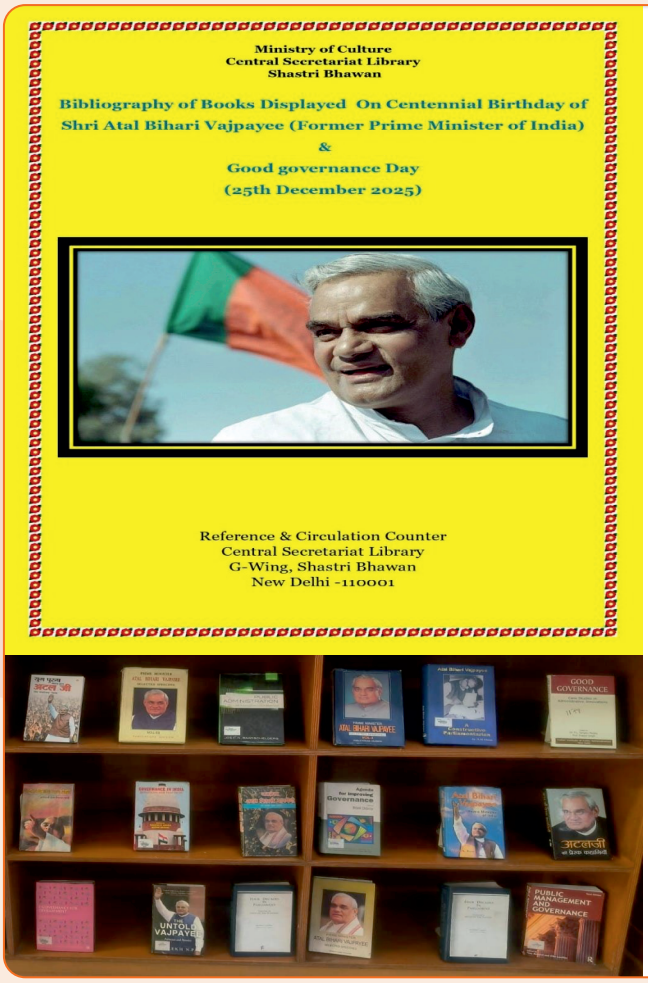

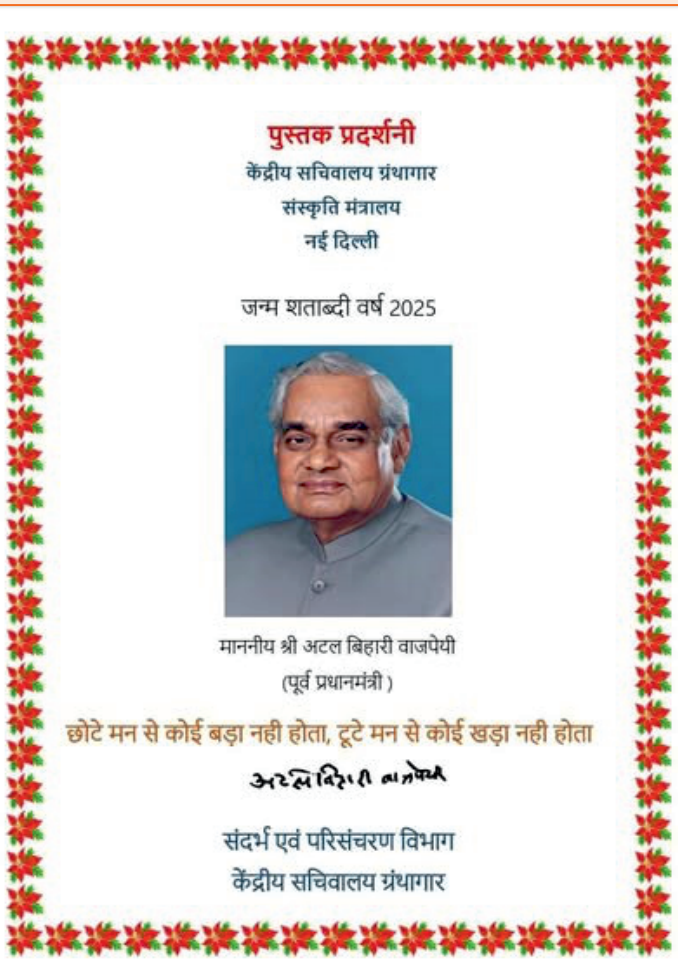








Ministry of Culture
Central Secretariat Library




संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय
स्वच्छता ही सेवा 2025
20 अक्टूबर, 2025
स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता



















Designed & Printed by: **Excel Printing Universe**, New Delhi | Mob.: 9899127755

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. राजेंद्र प्रसाद रोड, जी-विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001

https://www.csl.nic.in mailfromcsl@gmail.com

https://www.facebook.com/CSL.MOC; https://x.com/csl_moc?lang=en